आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

BHARAT MAKWANA

ओ३म्

विद्यार्थियों के आठ गुण

पुरुषार्थ (मेहनत)

बुद्धिवर्धक पदार्थों का सेवन करना

बुद्धिमत्ता (विवेक)

लोभ, लालच न करना

सुखी, सफल विद्यार्थी

स्थिरता-दृढता

घमंड न करना,
सरल रहना

प्रगतिशील रहना

समय बर्बाद न करना

निरंतर सफलता और उन्नति को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को ये अनमोल गुण ग्रहण करने चाहिए।

ओ३म्

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(संक्षिप्त रंगीन सचित्र जीवनी)

प्रेरणा

महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच)

सम्पादक

विजय भूषण आर्य

चित्रांकन

भारत मकवाना

प्रचारार्थ मूल्य : २५/- रूपये मात्र

महर्षि दयानन्द जी के विषय में विभिन्न महापुरुषों के विचार

1. महर्षि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक तथा मानवता के उपासक थे। - लोकमान्य तिलक

2. मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और उससे मेरे जीवन का लक्ष्य बदल गया। आर्य समाज के सिद्धांत सार्वभौमिक हैं। उन्हें हराने की किसी में शक्ति नहीं है। - हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल

3. स्वामी दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों और श्रेष्ठ पुरूषों में अग्रणी थे। उनका ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, स्वातन्त्र्य स्वराज्य,सर्वप्रतिप्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। -महात्मा गांधी

4. स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है इसलिए वे केवल आर्य समाजियों के लिये नहीं अपितु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं। - कस्तूरबा गांधी

5. महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का विकास किया जो उसके आचार सम्बंधी पुनरूत्थान तथा धार्मिक पुनरूत्थान के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। संगठन कार्य दृढ़ता, उत्साह और समन्वयपालकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई और समाज नहीं कर सकता। - नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

6. स्वामी दयानन्द संस्कृत के बड़े विद्वान् और वेदों के बहुत बड़े समर्थक थे। उत्तम विद्वान् के अतिरिक्त साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके अनुयायी उनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। हमसे स्वामी दयानन्द की बहुत मुलाकात थी। हमेशा इनका निहायत आदर करते थे। वह ऐसे व्यक्ति थे जिनकी उपमा इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है। - महर्षि के समकालीन-सर सैयद अहमद खाँ, (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक)

7. मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा। - दादाभाई नौरोजी

8. स्वामी दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। - महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर

9. स्वामी दयानन्द जी का सबसे बडा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली। - लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल

10. महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने जो स्वराज्य का पहला सन्देश हमें दिया उसकी रक्षा हमें करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। - सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन

11. गांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। - प्रथम लोकसभा अध्यक्ष, डॉ०श्री अनन्तशयनम् आयंगर

12. मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरू दयानन्द को जिन्होंने भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्तकर सत्य और पवित्रता की जागृति में ला खड़ा किया, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम। - रविन्द्र नाथ टैगोर

महर्षि दयानन्द जी के आने से पूर्व भारत की दशा —
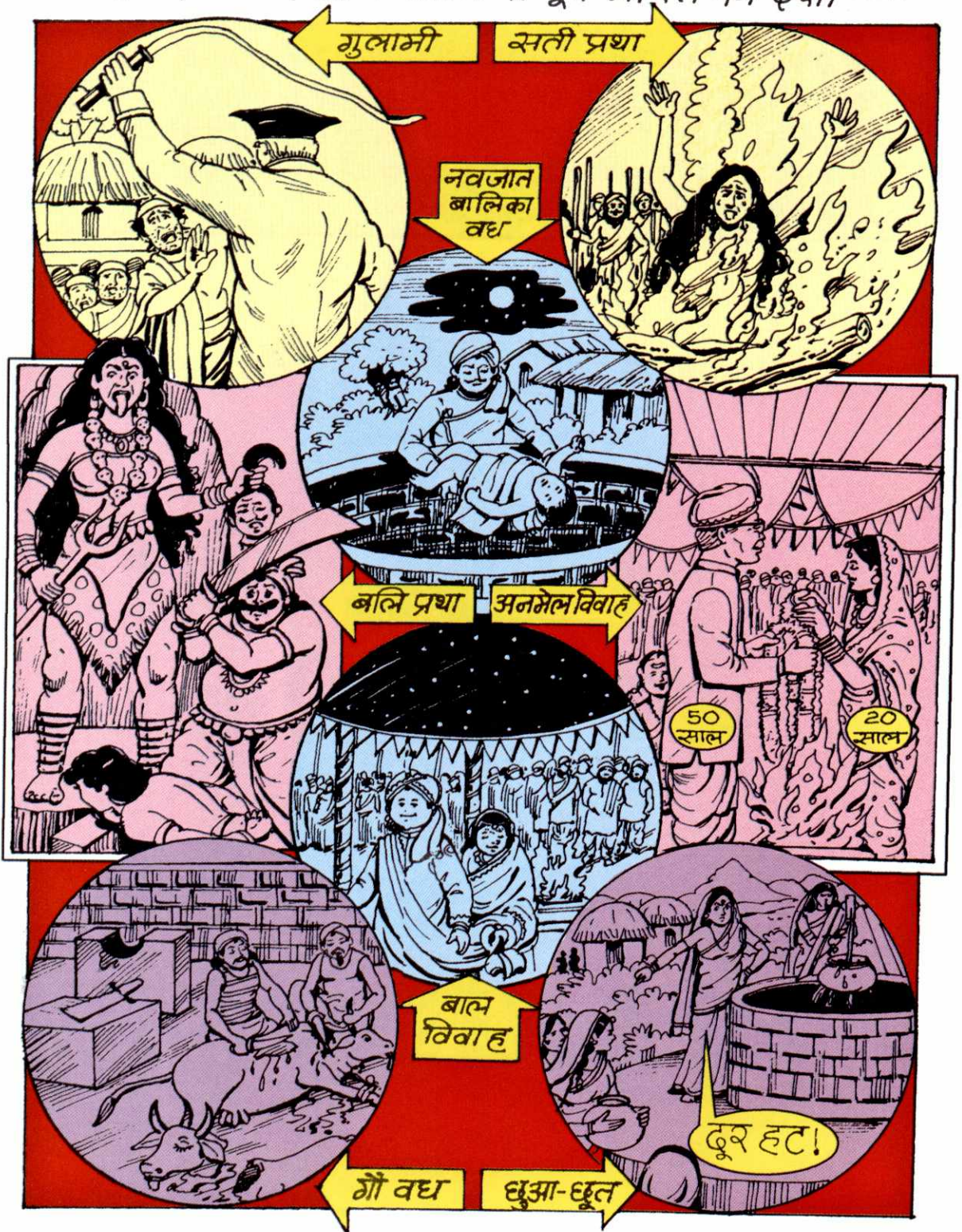
जन्म-

सम्वत् 1881 फाल्गुन बदी दसवीं, 12 फरवरी 1824 को गुजरात के मौरवी प्रांत के ग्राम टंकारा में **कर्षन जी तिवारी** जो जन्म से ही औंदीच्य ब्राह्मण थे। वे धनाढ्य ज़मींदार और सरकार की ओर से राजस्व अधिकारी नियुक्त थे। उनके घर एक सुन्दर बालक ने जन्म लिया। मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण माता-पिता ने उनका नाम **मूलशंकर** रखा। जिसने कालान्तर में **महर्षि दयानन्द सरस्वती** के रूप में दीक्षित होकर विश्व को **वैदिक ज्ञान** से आलोकित किया।

महान् समाज सुधारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

महापुरुष तो बहुत हुए पर महर्षि स्वामी दयानंद जैसा कोई नहीं जिसका प्रेरणा-दायी जीवन अलग ही है। जिन्होंने देश के नहीं, विदेश के विद्वानों को भी एक नई दिशा दी। महापुरुषों के जीवन में प्रायः किसी घटना के कारण परिवर्तन हुआ है। इसीप्रकार शिवरात्रि व्रत के लिए मूलशंकर(महर्षि दयानन्द) को उनके पिता मन्दिर ले गए वहां उसने देखा कि चूहा मूर्ति पर चढ़कर खाद्य सामग्री खा रहा है उन्होंने सोचा

बालक ने पिता की आज्ञा का पालन करना चाहा, परन्तु उसका चित्त एकाग्र नहीं हो सका।

उनका मूर्ति पूजा से विश्वास उठ गया।

बचपन में चाचा व प्यारी बहन की मृत्यु देखकर उनके मन में वैराग्य भावना उत्पन्न हो गई। एक रात वे चुप-चाप सत्य की खोज में घर से निकल पड़े....
पाखण्डी साधुओं की टोली ने मूलशंकर को लूटा।
छोकरा अमीर लगता है, उसके सोने के आभूषण तो देखो।
कहाँ से आ रहे हो, और कहाँ जा रहे हो बच्चा?
मैंने वैराग्य ले लिया है, सच्चे गुरु की तलाश में जा रहा हूँ।
वैरागी को ये आभूषण शोभा नहीं देते, इन्हें त्याग दो।
मूलशंकर सब गहने उन्हें देकर आगे बढ़ गये।
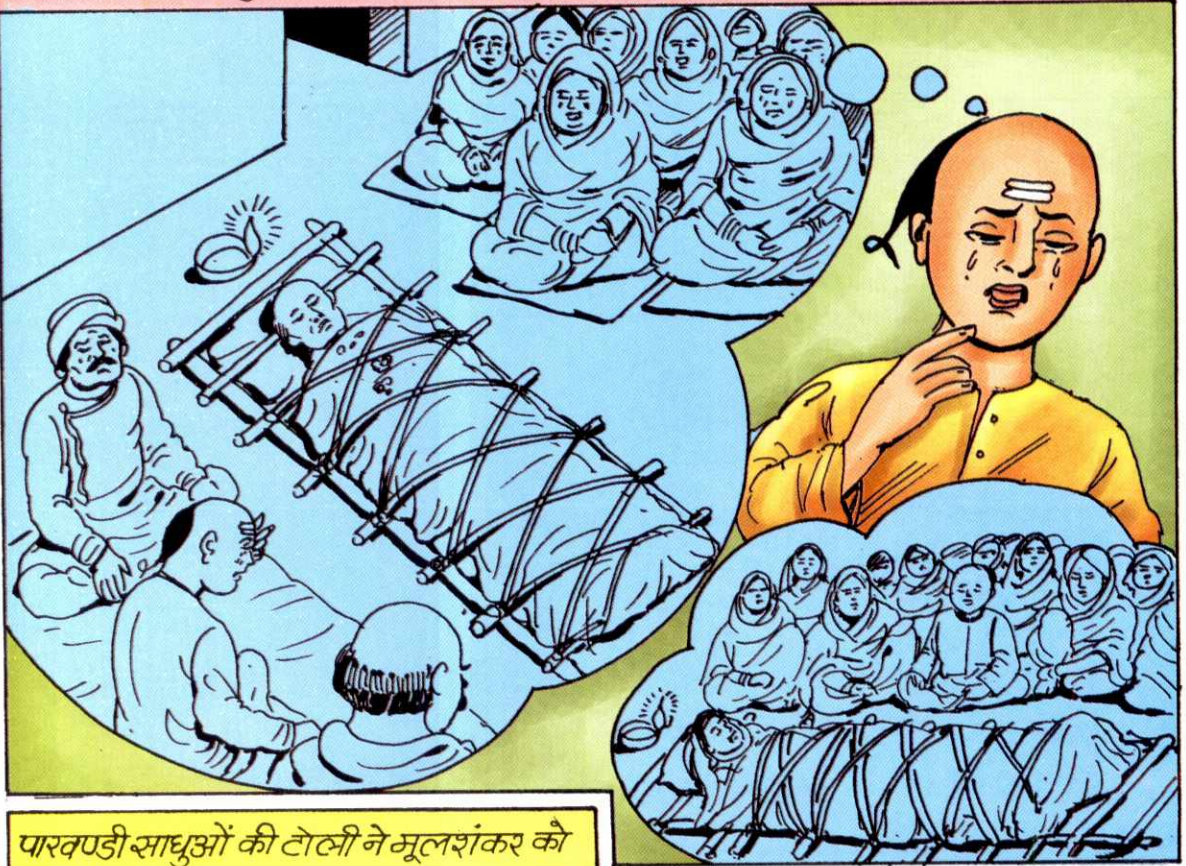
सच्चे गुरु की तलाश करते हुए एक दिन मूलशंकर ओखी मठ पहुँचे। मूलशंकर के तेजस्वी व्यक्तित्व को देखकर मठाधीश बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने उनका प्रेमपूर्वक स्वागत किया। वहाँ ठहरकर मूलशंकर ने देखा कि धर्म के नाम पर अधर्म हो रहे थे, वेदों के नाम पर ऊल-जुलूल ग्रन्थ पढ़ाये जा रहे थे।
मूलशंकर! इस मठ के मठाधीश बन जाओ, मेरे बाद मठ के स्वामी तुम ही बनोगे।
महन्त जी! मेरे परिवार में धन की कमी नहीं। मैं तो केवल सत्य की खोज में घर से निकला हूँ।
स्वामी 'पूर्णानंद सरस्वती' से दीक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य (मूलशंकर) 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' कहलाये फिर बारह वर्ष तक सच्चे गुरु की तलाश में भटकते रहे।
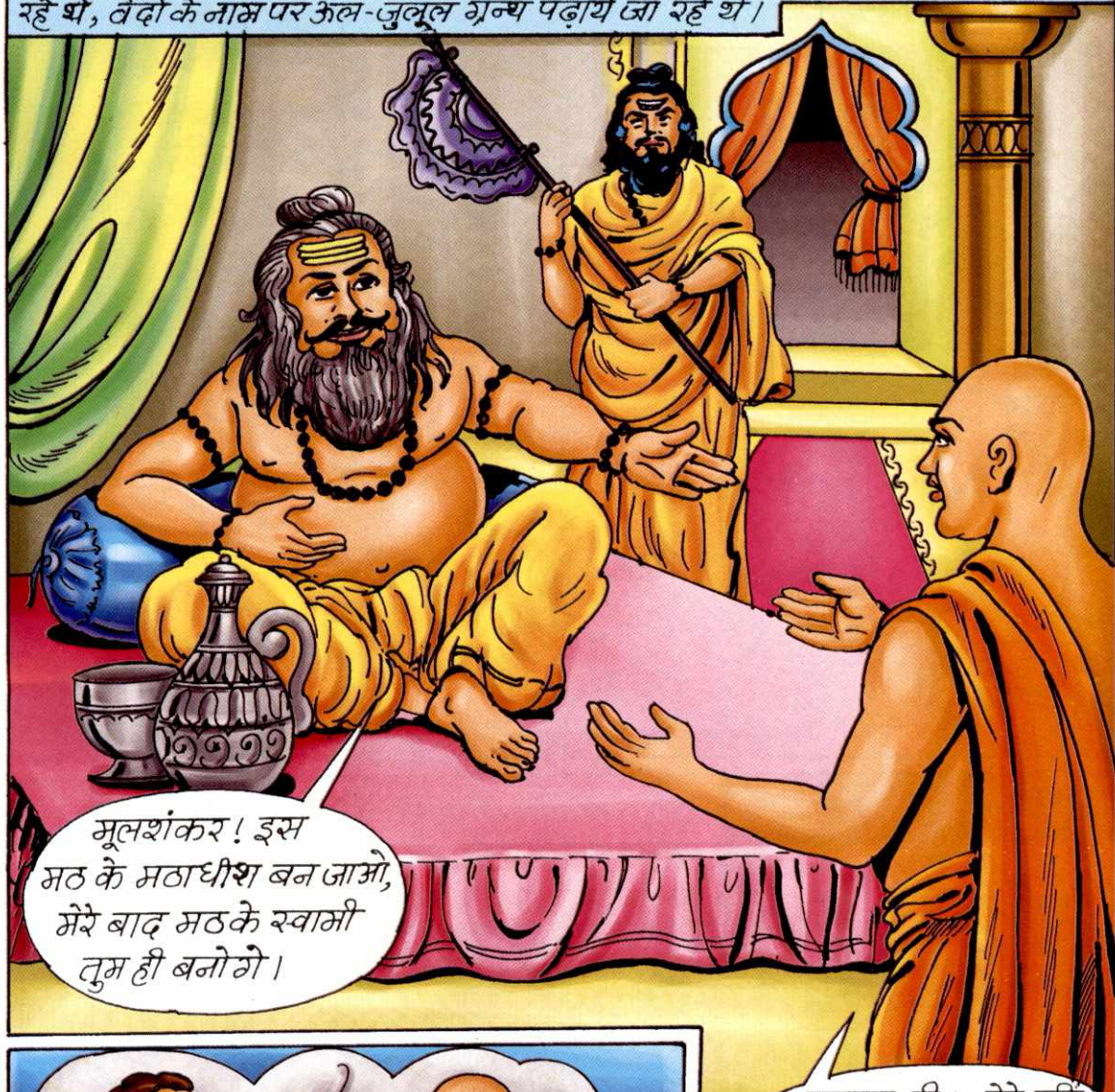
राजयोग— १९०६ वि. में स्वामीजी ने 'स्वामी शिवानन्द गिरि' और 'स्वामी ज्वालानन्द पुरी' नामक दो योगियों के सान्निध्य में 'पातञ्जल योग' सीखा। दोनों योगियों ने योग के सिद्धान्तों का ज्ञान तो कराया ही साथ में व्यावहारिक साधना का भी समुचित प्रशिक्षण दिया।
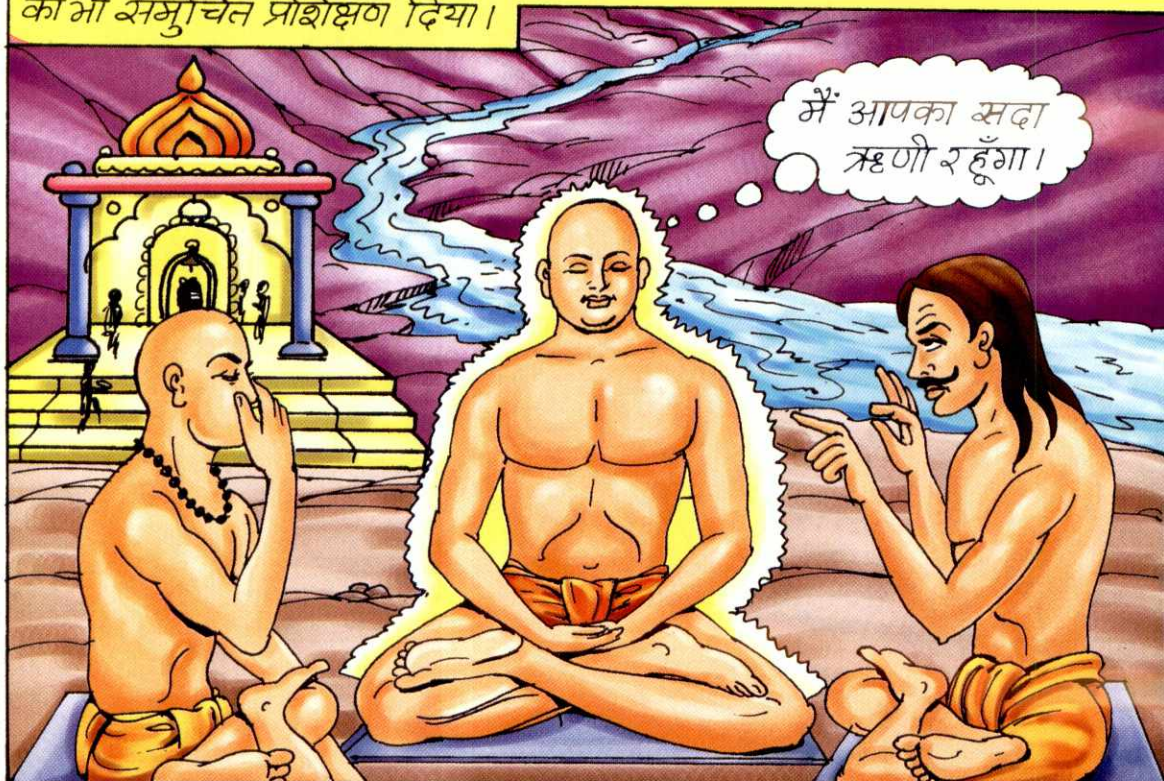
मैं आपका सदा ऋणी रहूँगा।

हठयोग अनुचित—

१९१२ वि॰ में उन्होंने हठयोग के ग्रंथों का अध्ययन किया था। उसमें मानव-शरीर के भीतरी चक्रों तथा नाड़ियों आदि का उल्लेख मिलता है। एक दिन उन्हें वास्तविकता जानने का अवसर मिल गया। नदी में प्रवाहित होते शव को बाहर निकाल कर उसे चाकू द्वारा चीरफाड़ कर देखा तो वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हठयोग में वर्णित उल्लेख में कोई सच्चाई नहीं है। अतः उन्होंने अपने ग्रंथों के समूह से उन ग्रंथों को अलग कर दिया।

हठयोग प्रदीपिका

हठयोग उचित नहीं है, हमें सत्य ग्रहण करना चाहिये और असत्य का त्याग करना चाहिये।

प्रत्येक कार्य बुद्धिपूर्वक करना चाहिये।

रीछ से भिड़न्त-

एक समय स्वामीजी नर्मदा के निकटवर्ती जंगलों में विचरण कर रहे थे। तभी उनके सामने एक भयंकर रीछ ने दौड़ते हुए हमला करना चाहा परन्तु निर्भीक संन्यासी ने अपने हाथ का सोटा रीछ के सामने बढ़ाया। रीछ भयभीत होकर उल्टे पाँव भाग गया।
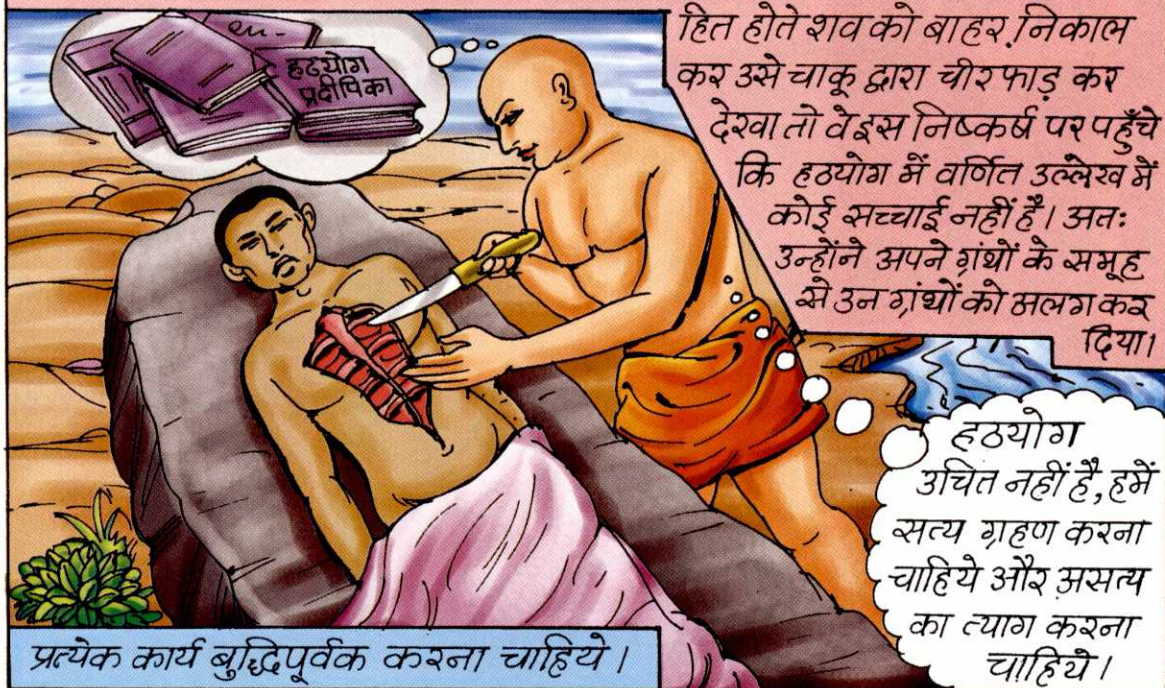
सच्चे गुरु की तलाश करते-करते ३६ वर्ष की अवस्था में गुरु विरजानन्द से भेंट हुई –

कौन?

मैं यही जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ ?

मुझे सत्य की खोज है। मैंने वेदांत और योग का अध्ययन किया है और सारस्वत ग्रंथों से संस्कृत व्याकरण भी पढ़ा है। फिर भी मुझे शांति नहीं मिली।

इन ग्रन्थों को यमुना में फैंक कर मेरे पास आओ
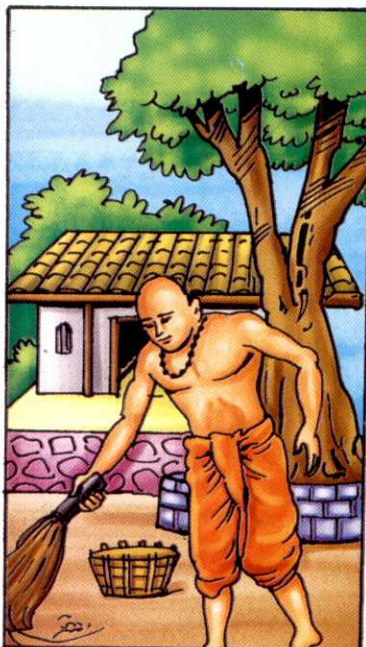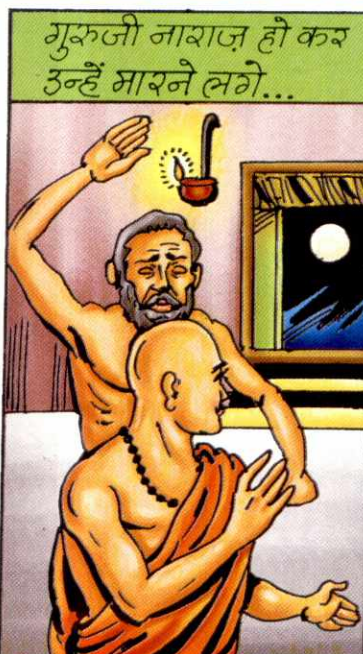
दयानन्द ने बिना किसी हिचक के उन्हें यमुना में फैंक दिया ।
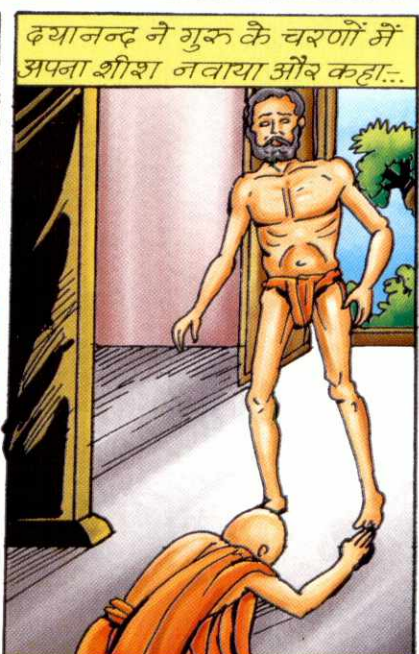
शिक्षा प्राप्ति के बाद गुरु - दक्षिणा देने की प्रथा थी। उस समय दयानन्द के पास किसी व्यापारी द्वारा दी गई कुछ लौंग थी।
गुरुदेव ! गुरु दक्षिणा में देने के लिए मेरे पास केवल यह ज़रा सी लौंग हैं इसे स्वीकार करें।
दयानन्द ! इस दुःखी संसार को वेदों का संदेश दो। देश स्वतन्त्र कराओ। तुमसे मुझे यही गुरु दक्षिणा चाहिए।
संसार में केवल वेद ही ज्ञान का प्रकाश दे सकते हैं।
गुरु आज्ञा के बाद दयानन्द सत्य का प्रकाश करने निकल पड़े।
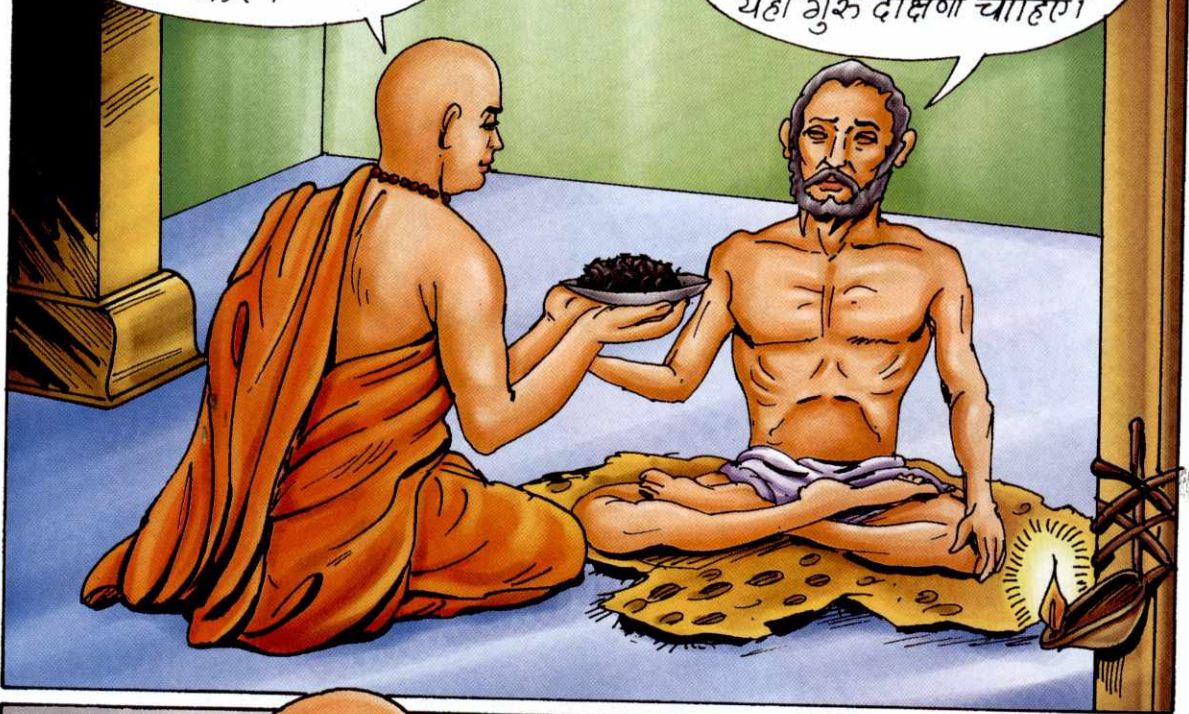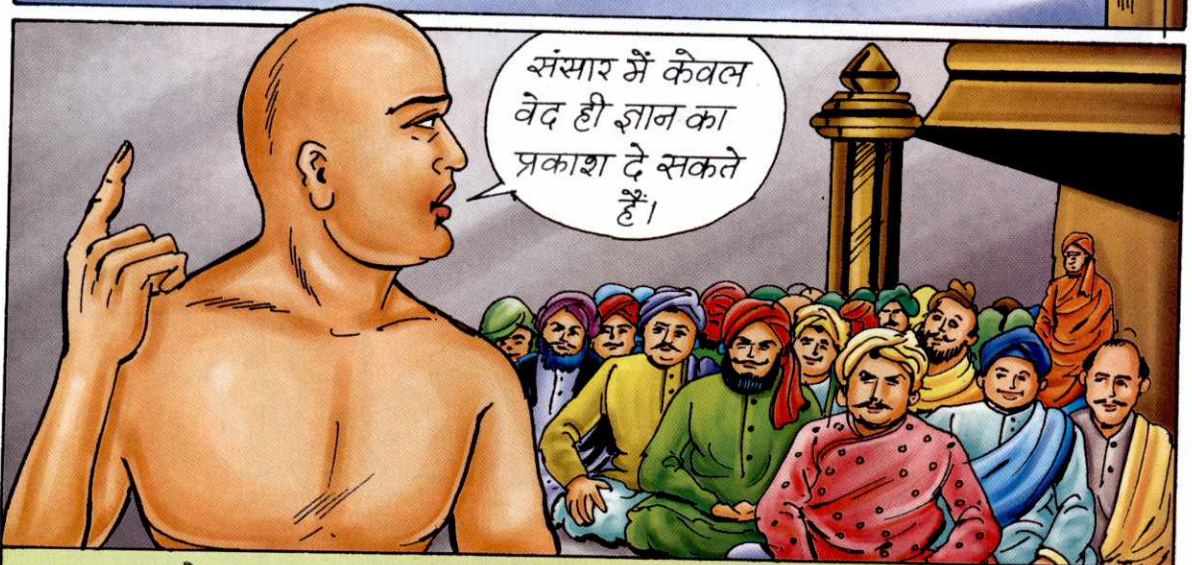
1857 : धार्मिक एकता–

मानव-मानव एक समान
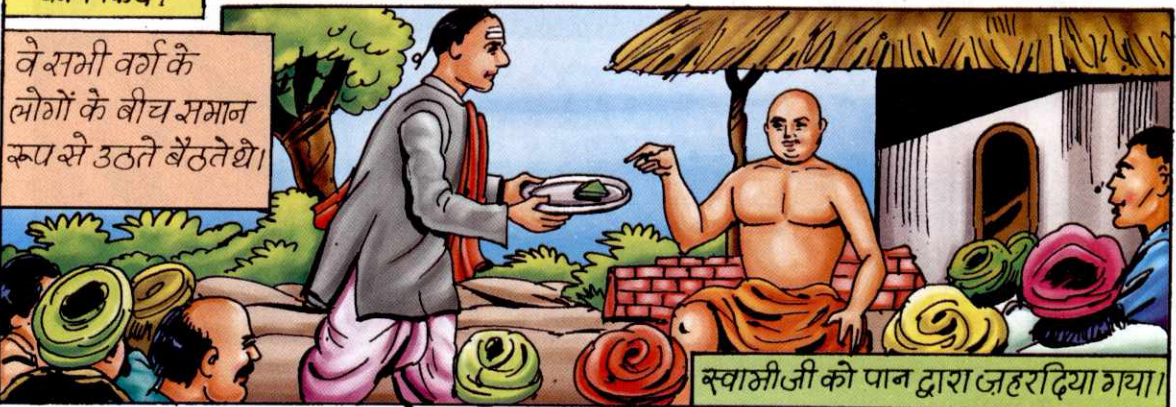
लोगों को बन्दी बनाने नहीं आया–

* विधवा विवाह का समर्थन कर करोड़ों विधवाओं को नवजीवन प्रदान किया और कन्या विद्यालय प्रारम्भ करवाये।

पादरियों से विचार विमर्श —

गौरक्षा के लिए कर्नल ब्रुक से भेंट—

स्वामीजी! देश की उन्नति के लिए गौरक्षा को आवश्यक मानते थे, इस बारे में उन्होंने 'कर्नल ब्रुक' से बात की।

हमें गौरक्षा अवश्य करनी चाहिये।

स्वामीजी! मैं प्रयास करूँगा।
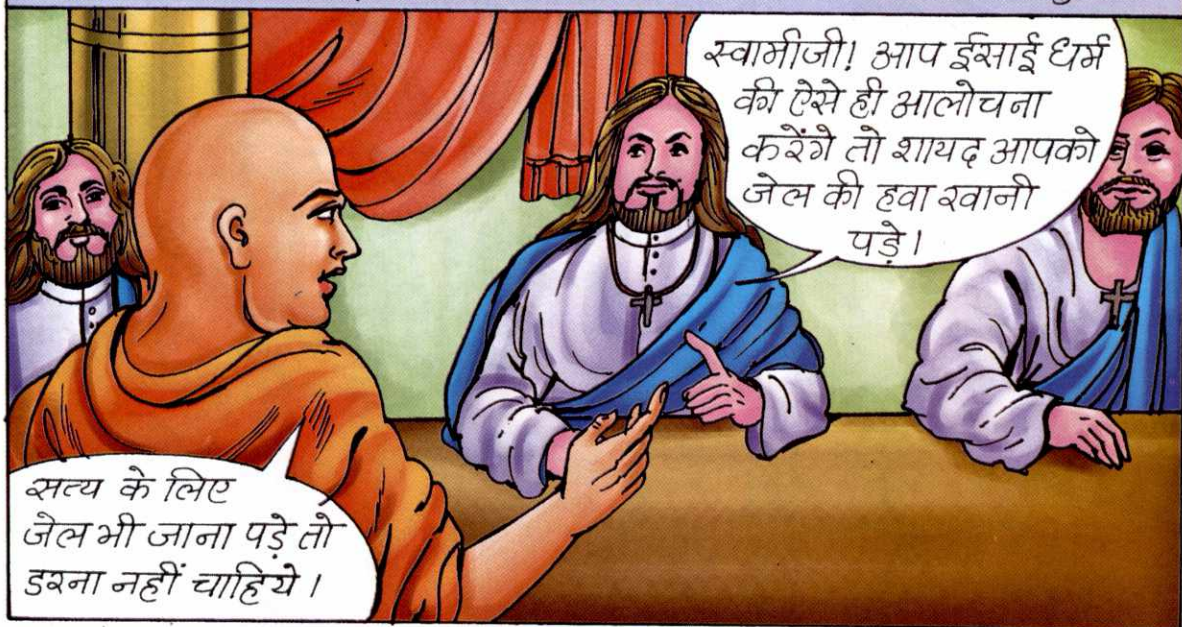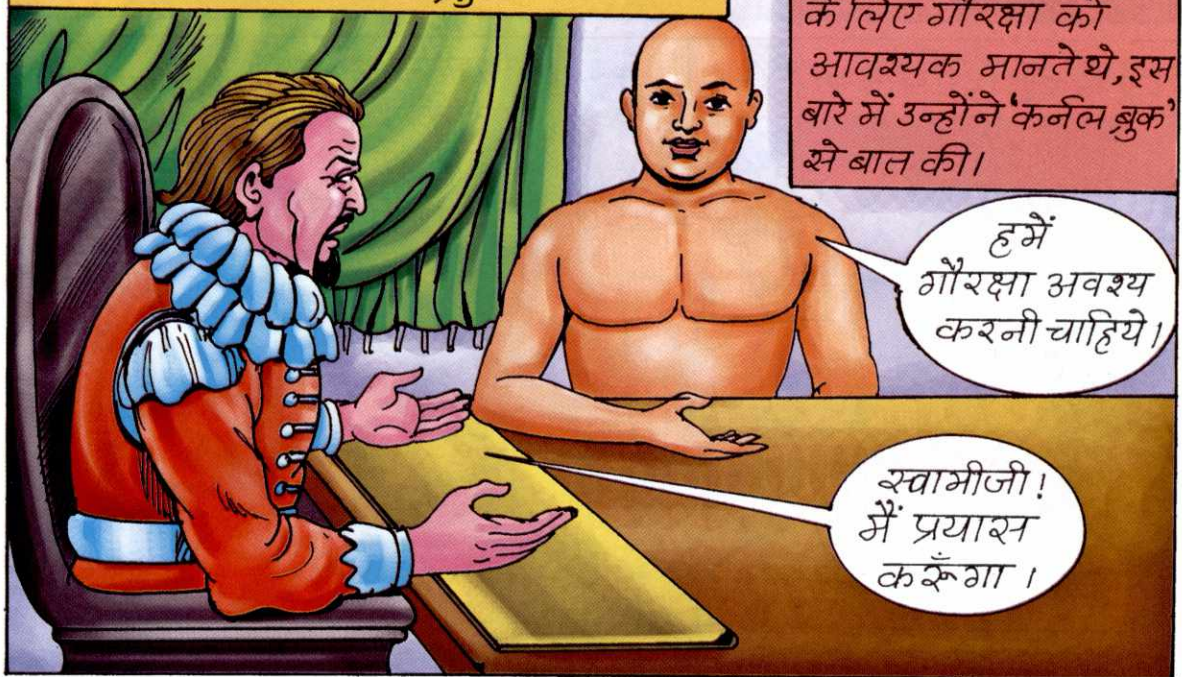
हरिद्वार में पताका फहराई–

कुम्भ के मेले में स्वामीजी हरिद्वार आए। वहाँ उन्होंने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई।

पाखण्ड खण्डिनी पताका

हमें धर्म की कुरीतियाँ छोड़नी होंगी, इसके बिना मानवता की उन्नति नहीं होगी।
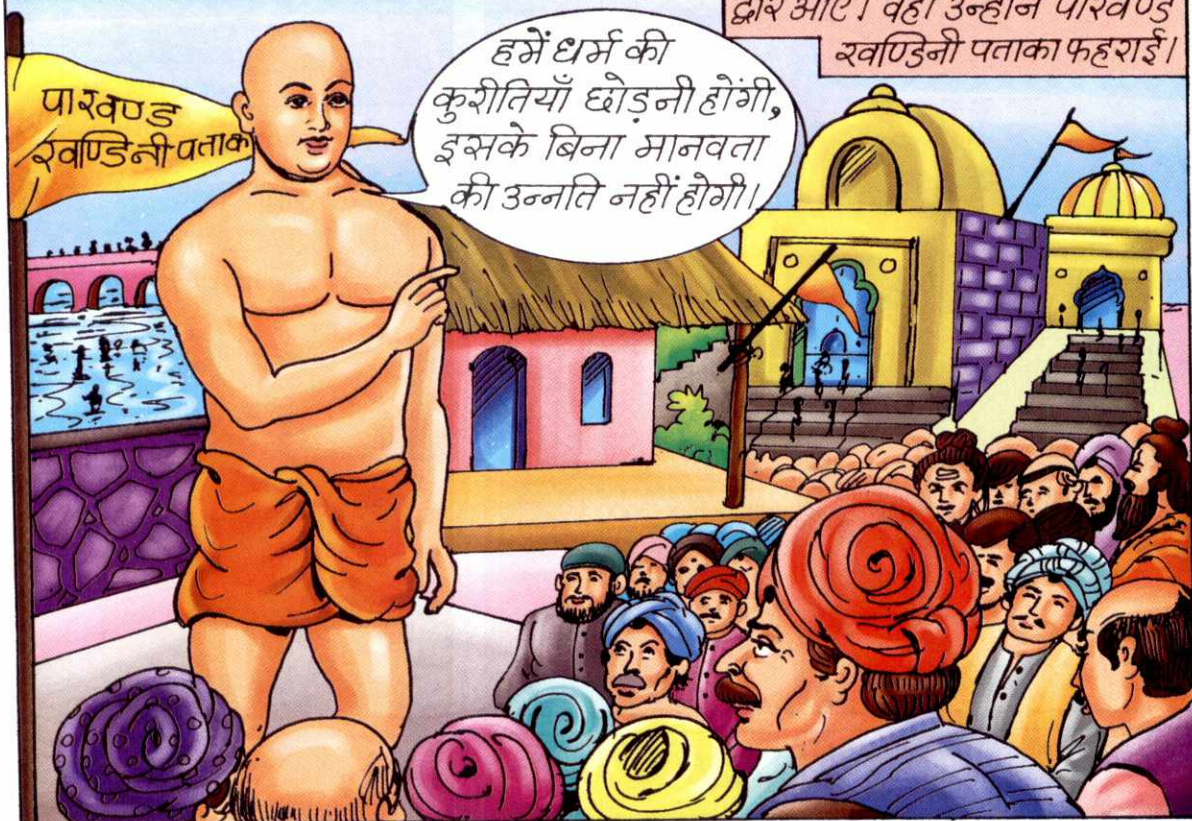
फिर स्वामीजी ने नाई की भावना का पूर्ण सम्मान कर तृप्त हो, भोजन किया।

राव कर्णसिंह का गर्व टूटा-
राव कर्णसिंह, स्वामी जी द्वारा की गई रासलीला की आलोचना को सहन नहीं कर सका और उन्हें कठोर वचन कहने लगा। स्वामीजी बड़ी देर तक उसे सुनते रहे। पर जब कर्णसिंह तलवार का ज़ोर दिखाने लगा तब...
आप रासलीला- रामलीला का खण्डन मत किया करो।
हमारे महापुरुषों श्री राम, श्री कृष्ण का स्वांग उचित नहीं।
आप खण्डन करोगे तो मैं...
...स्वामीजी ने राव के हाथ से तलवार छीनकर तोड़ दी।
तुम्हें लड़ना ही है तो किसी क्षत्रिय राजा से लड़ो, मुझ जैसे संन्यासी से उलझना उचित नहीं।
राव लज्जित होकर वहां से चला गया।

कुरीतियों के विरूद्ध शास्त्रार्थ- विदेश जाना, मृतक श्राद्ध, दहेज, नारियों व अछूतों पर धार्मिक प्रतिबन्ध -हिन्दू समाज पर कलंक बने हुए थे। उन्होंने पाखण्डी पण्डितों से शास्त्रार्थ कर वेदों के पावन उपदेश दिये व अंग्रेज़ों के कुटिल षड्यन्त्र को भी विफल कर दिया।

अपने देश की ग़रीबी के कारण हुई दुर्दशा स्वामी दयानन्द सरस्वती से नहीं देखी गयी।
आह! मेरे देश की माँ अपने मरे हुए बच्चे के शरीर से चीथड़ा तक उतार रही है। हे ईश्वर! यह कैसी ग़रीबी?
नहीं, ईश्वर इतना अन्यायी नहीं हो सकता। सत्य की खोज के अलावा अब मुझे कहीं शांति नहीं मिलेगी।
अंग्रेज़ों के अत्याचारों व देश में फैली ग़रीबी से वे खिन्न थे। देश ग़ुलाम था।
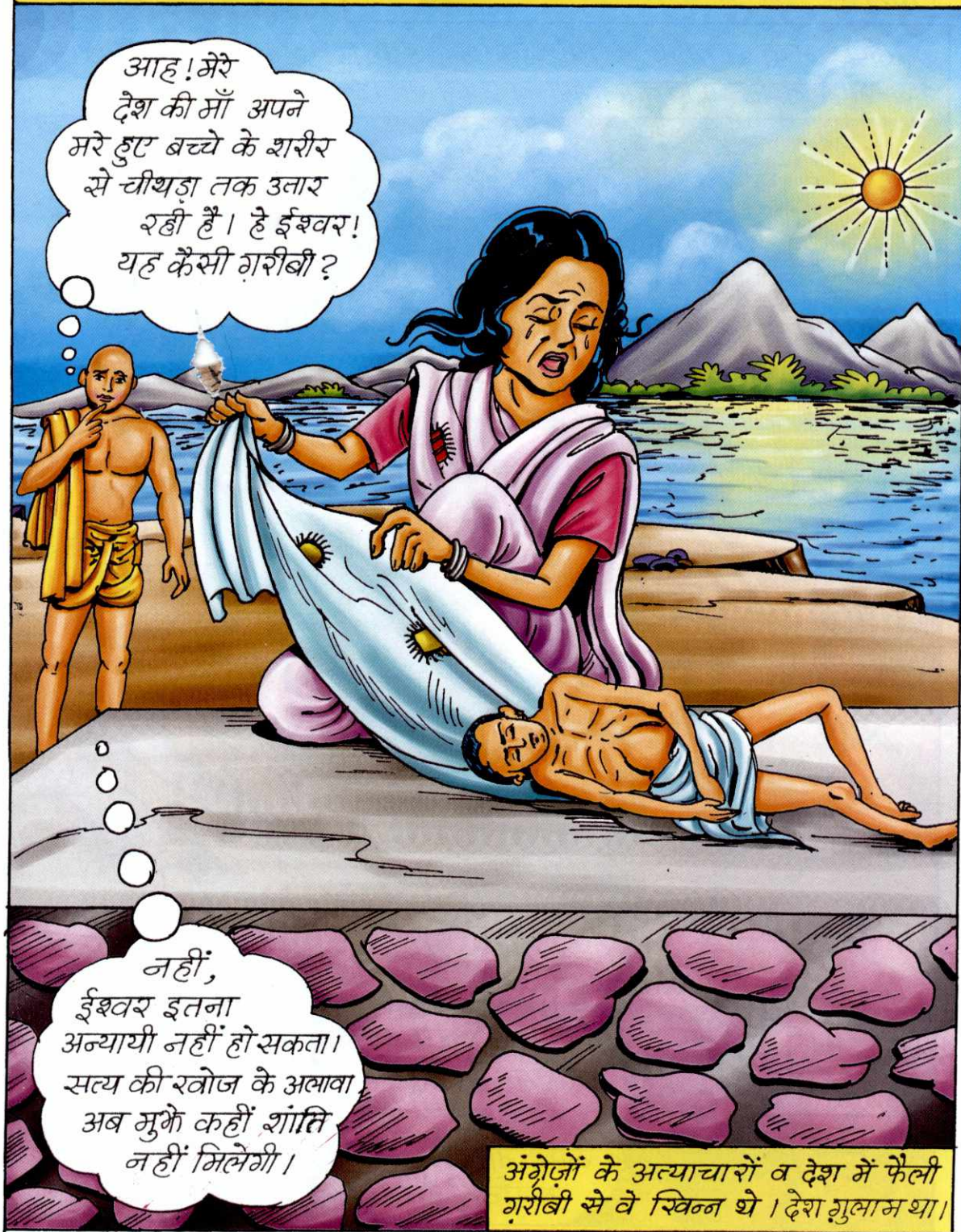
ताँत्रिक मायाजाल का खण्डन-

भारतीय धर्म के इतिहास में दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने तंत्राधारित वाम-मार्ग तथा इस विचार-धारा का प्रबल खण्डन किया।

स्वामीजी अद्भुत बल के 'स्वामी'

चलो! परे हटो।
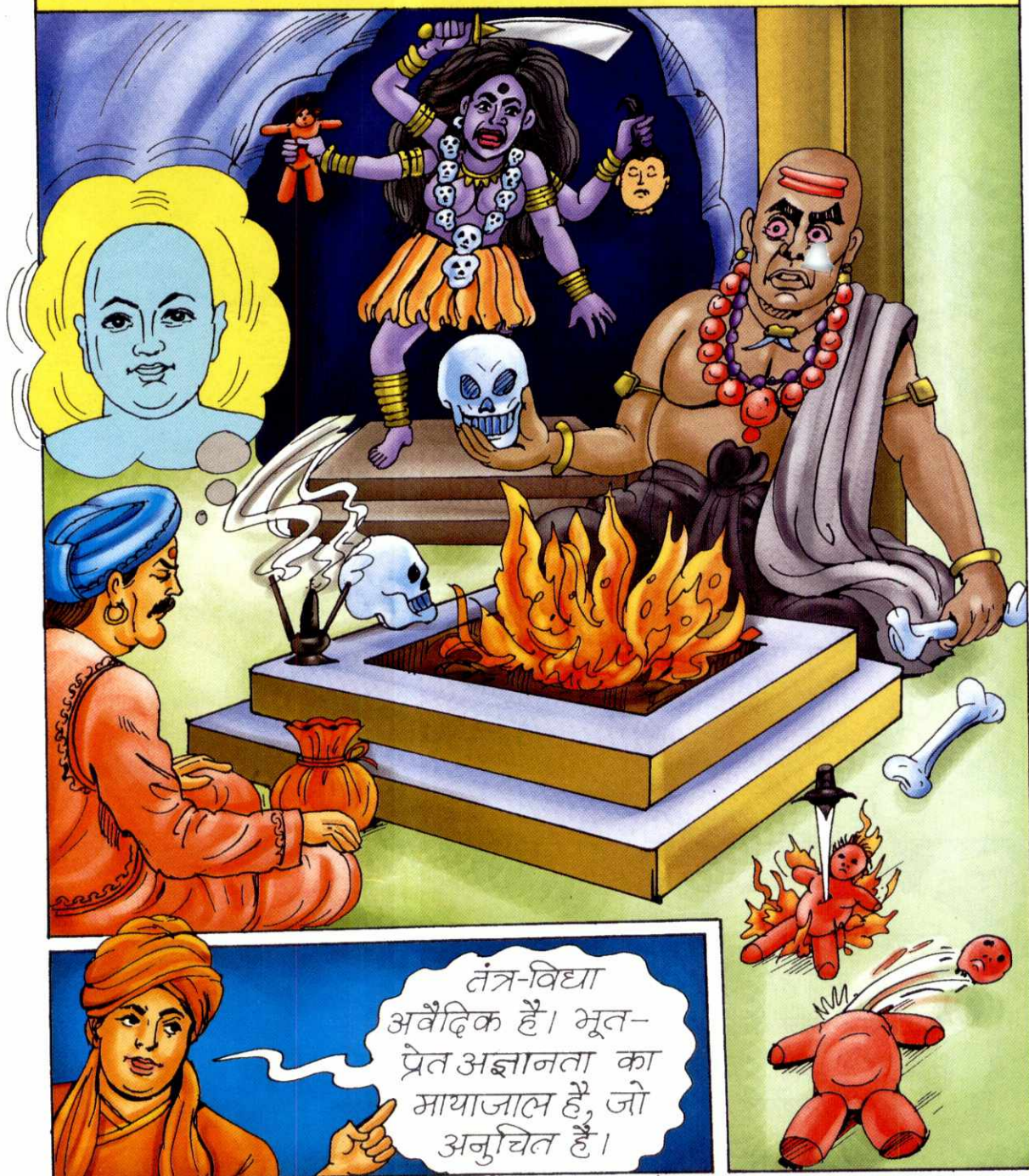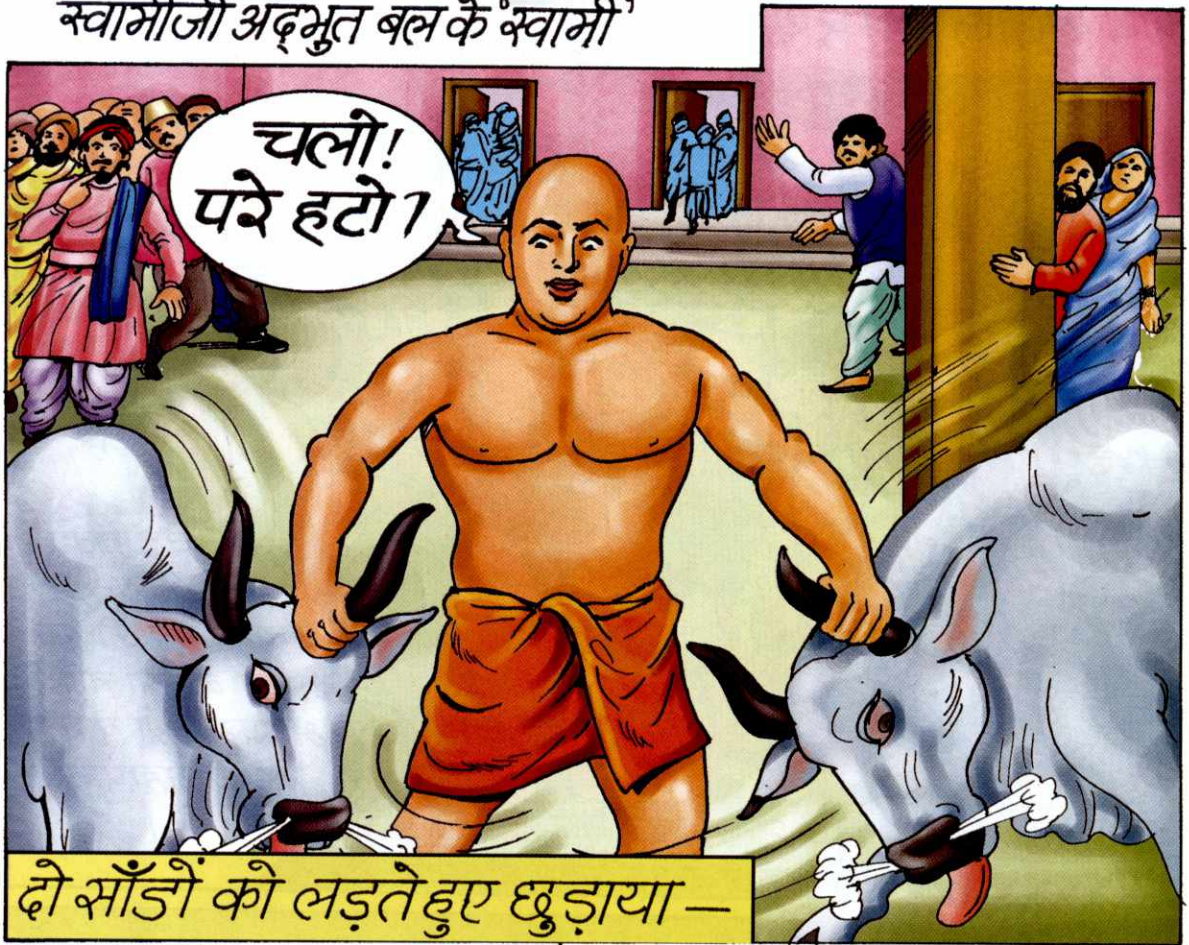
दो साँडों को लड़ते हुए छुड़ाया —
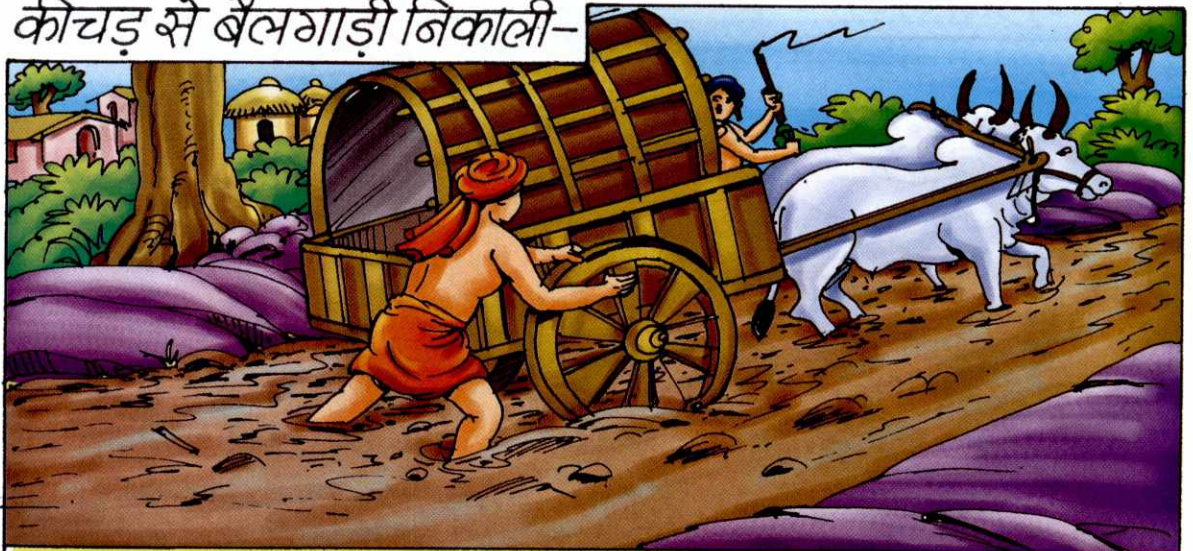
कीचड़ से बैलगाड़ी निकाली-

ब्रह्मचर्य की शक्ति से कीचड़ में फंसी बैलगाड़ी निकाली।

आर्य समाज की स्थापना–

वेद ईश्वर की वाणी है। हमें वेदानुसार जीवन-यापन करना चाहिये। श्री राम, श्री कृष्ण हमारे महापुरुष हैं।

सन् 1875 में उन्होंने बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की तथा आर्य समाज के दस नियम भी बनाए।
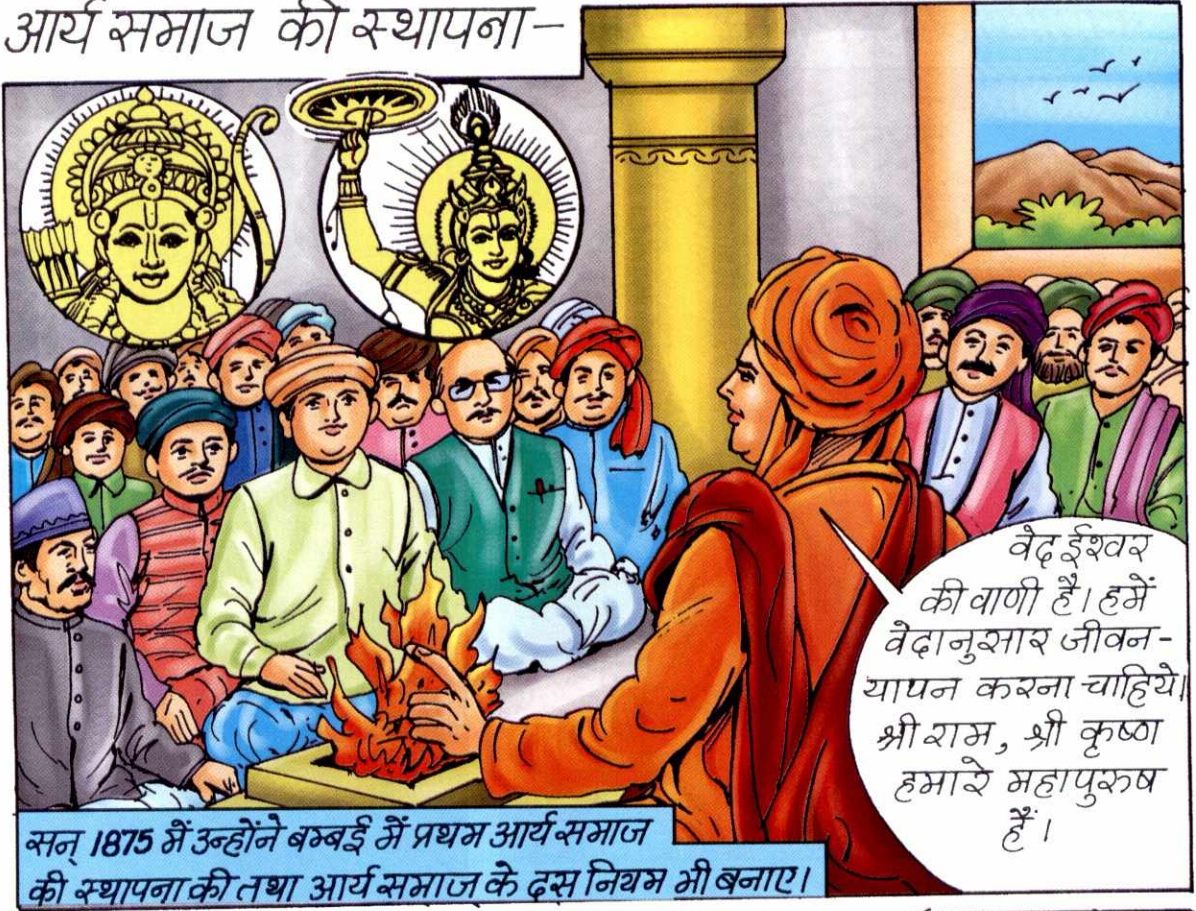
पुणे में प्रवचन –

दिल्ली दरबार में राष्ट्र कल्याण की चर्चा-

स्वामीजी ने दिल्ली में ब्रह्मसमाज के सूत्रधार केशवचन्द्र सेन, बाबू नवीन-चन्द्रराय, सुधारवादी मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खां, बाबू हरीशचन्द्र चिन्तामणि, कन्हैयालाल अलखधारी और मुन्शी इन्द्रमणि आदि महानुभावों की संगोष्ठी बुलाकर उनसे विचार-विनिमय किया।
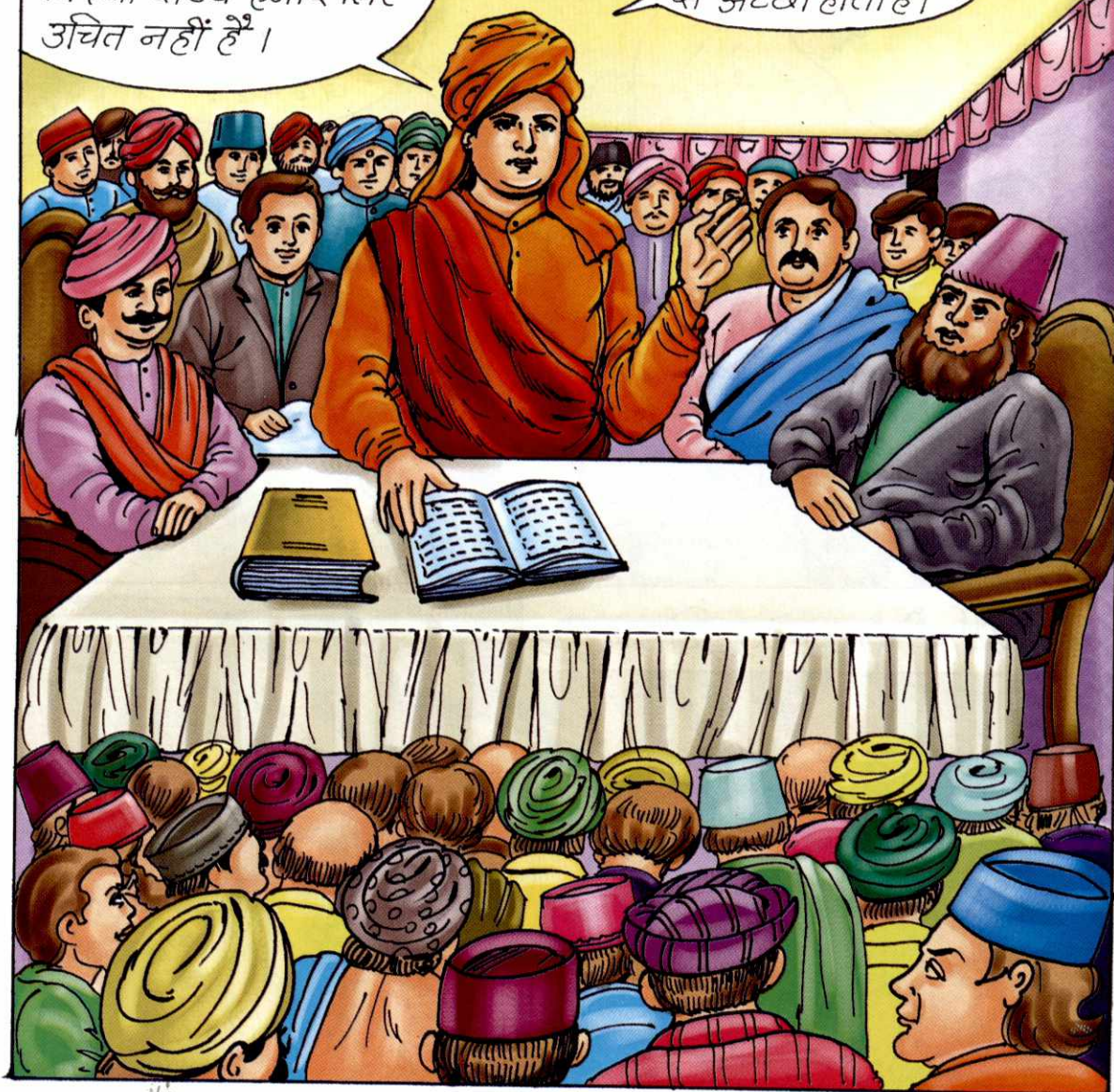
ब्रह्मचर्य शक्ति का प्रदर्शन–

जालन्धर के सरदार विक्रमसिंह ने स्वामीजी से कहा कि आप ब्रह्मचर्य से अतुलबल की प्राप्ति की बात करते हैं, पर इसका सबूत क्या है? उस समय स्वामीजी चुप रहे, पर सांझ के समय सरदार विक्रम सिंह अपनी बग्घी में बैठकर घूमने निकले तब उन्होंने बग्घी का एक पहिया अपने हाथ से पकड़ लिया। बग्घी अपनी जगह से टस से मस नहीं हुई तब सरदार विक्रम-सिंह को ब्रह्मचर्य के बल का सबूत मिल गया।
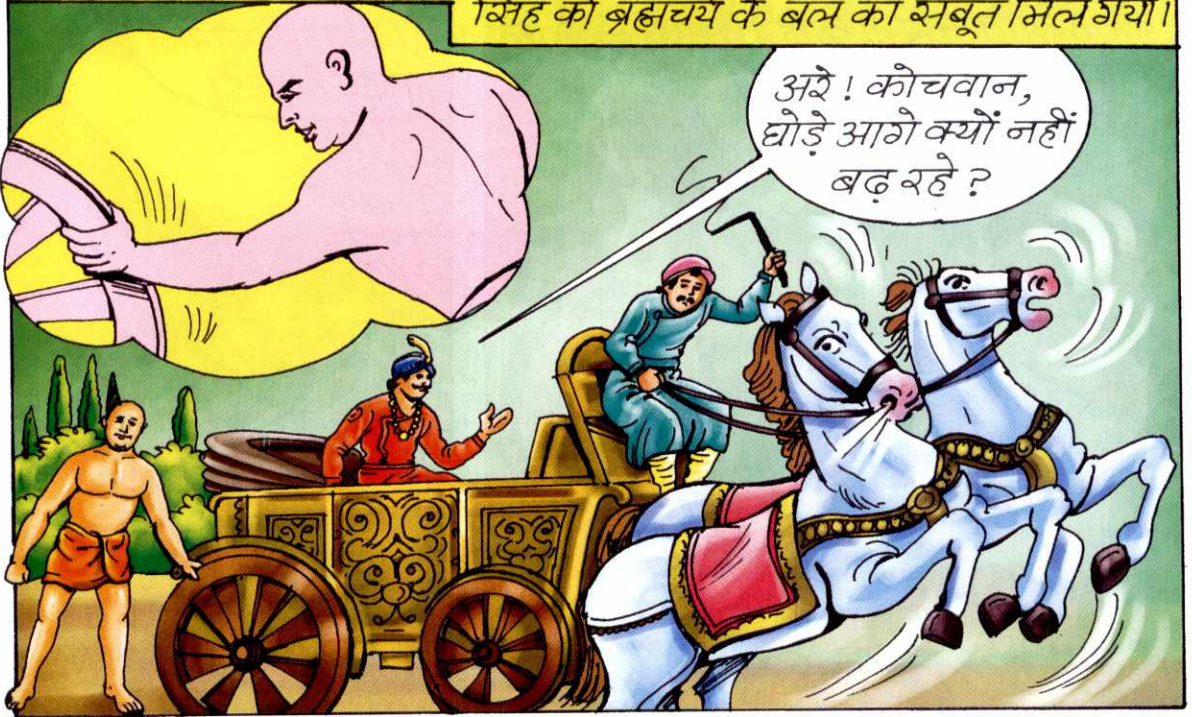
ब्रह्मचर्य से साहस व निडरता–

दुराचारियों को सुधारा —

जेहलम नगर में अमीचंद नाम के एक व्यक्ति ने स्वामीजी की आज्ञा से बहुत ही सुन्दर गीत गाया। श्रोता गीत सुनकर वाह-वाह कर उठे। एक भक्त ने स्वामीजी से कहा- महाराज! यह गीत तो अच्छा गाता है पर चरित्र-हीन है। इसने अपनी पत्नी को झगड़ा करके छोड़ रखा है। उसकी बात सुनकर स्वामीजी ने कहा-

अमीचंद! हो तो हीरे, पर कीचड़ में पड़े हो।

स्वामीजी के वचन सुनते ही अमीचंद पर बिजली का सा असर हुआ। उसने घर जाकर शराब की बोतलें तोड़ दीं तथा अपनी पत्नी को ससम्मान घर ले आया।
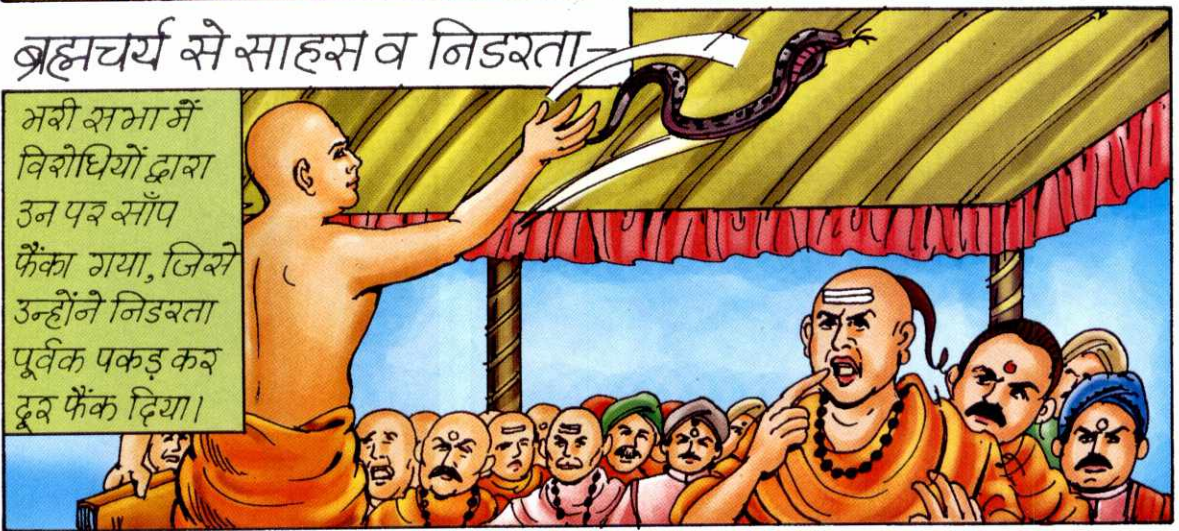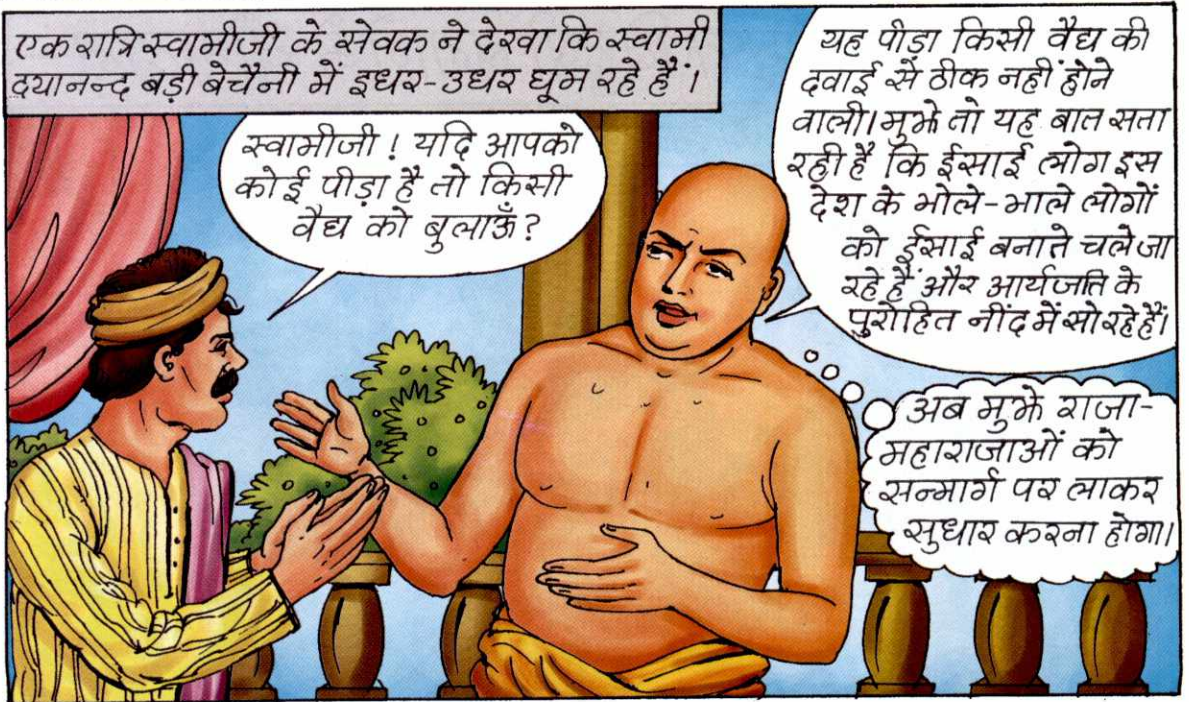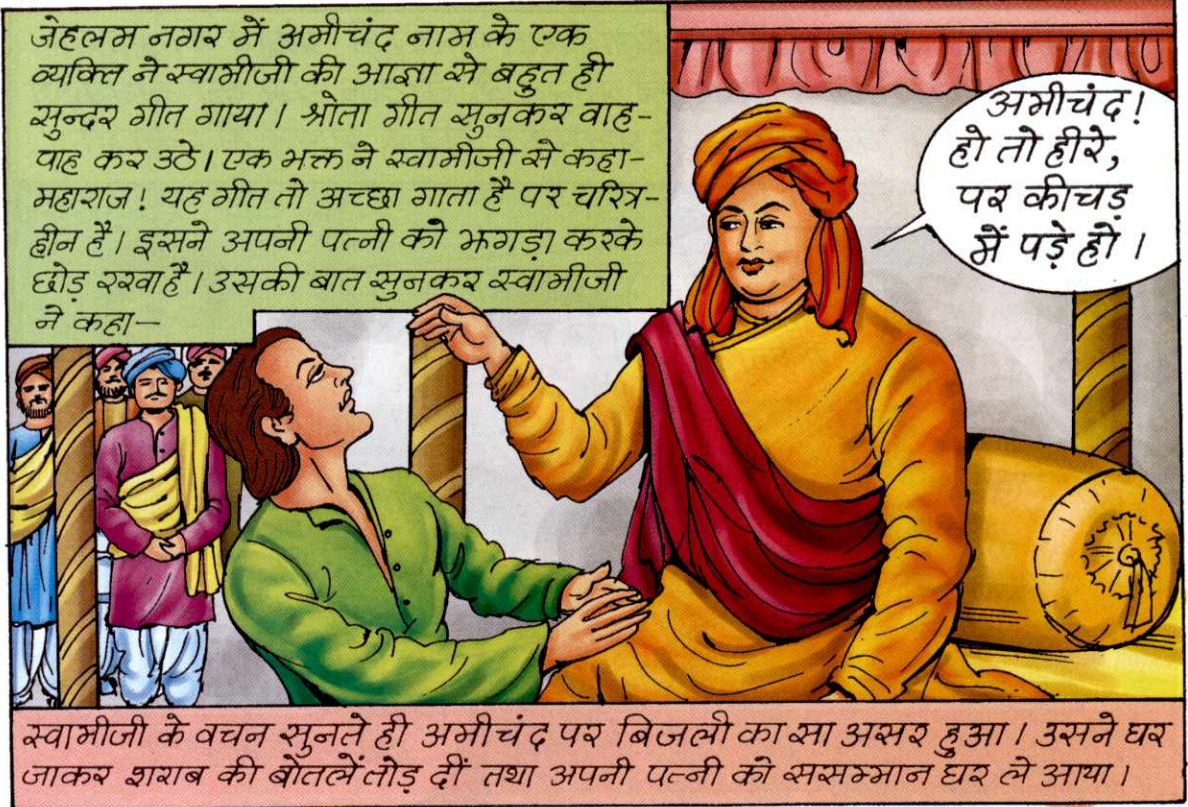
थियोसोफिकल सोसायटी से सम्बन्धविच्छेद-

जब थियोसोफी के अनुयाइयों को ईसाई मत से किसी प्रकार की आध्यात्मिक शान्ति नहीं मिली, तब उन्हें भारत के वैदिक धर्म की जानकारी मिली तो वे इस विचारधारा से प्रभावित होकर भारत में स्वामी दयानन्द जी से मिले।

स्वामीजी! हमें अपनाओ।

भूत-प्रेत,चमत्कार-वाद, कल्पित मनो-वैज्ञानिक बातों पर हमारा विश्वास नहीं, अतः मैं इसे नहीं मानता।

पहले थियोसोफिकल सोसायटी के लोग उनसे जुड़ने लगे पर सिध्दान्त भेद के कारण स्वामीजी ने उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

रमाबाई को संस्कृत विदुषी बनाने में योगदान-

रमाबाई ने स्त्रियों की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

पं० लेखराम प्रभावित होकर आये–

पण्डित जी! आप वैदिक धर्म का कल्याणकारी सन्देश घर-घर पहुँचाओ।
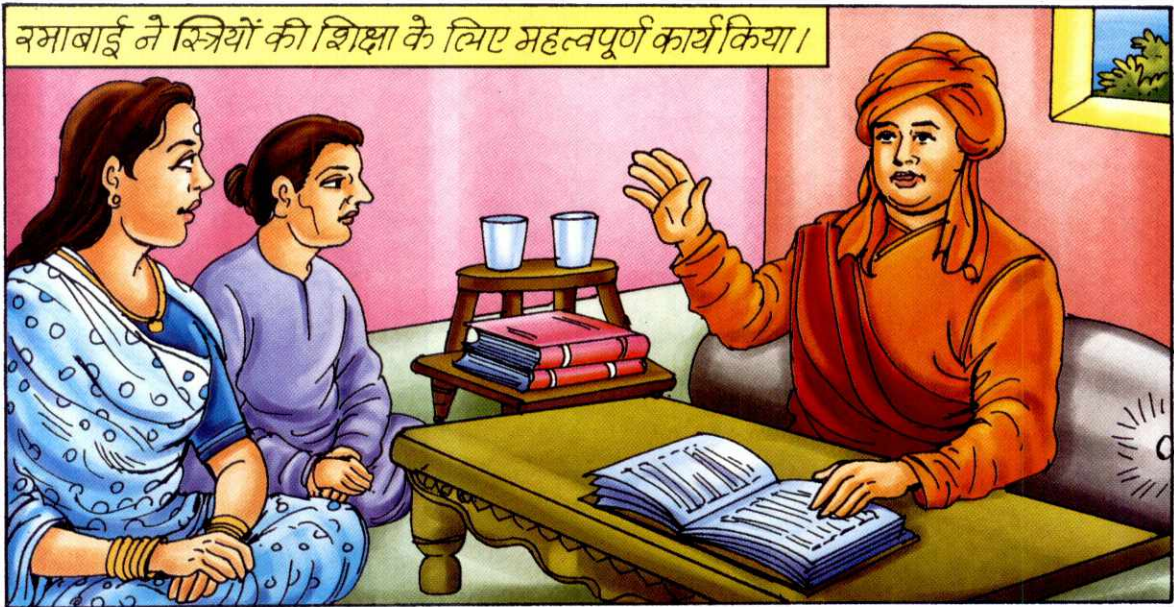
अष्टाध्यायी

पण्डित लेखराम जी ने स्वामीजी को दिया वचन अपने प्राण देकर भी निभाया।

महाराणा को उपदेश-
हमें स्वधर्म, स्व-संस्कृति, स्वभाषा, स्वदेशी-भूषा का गौरव बढ़ाना चाहिये।
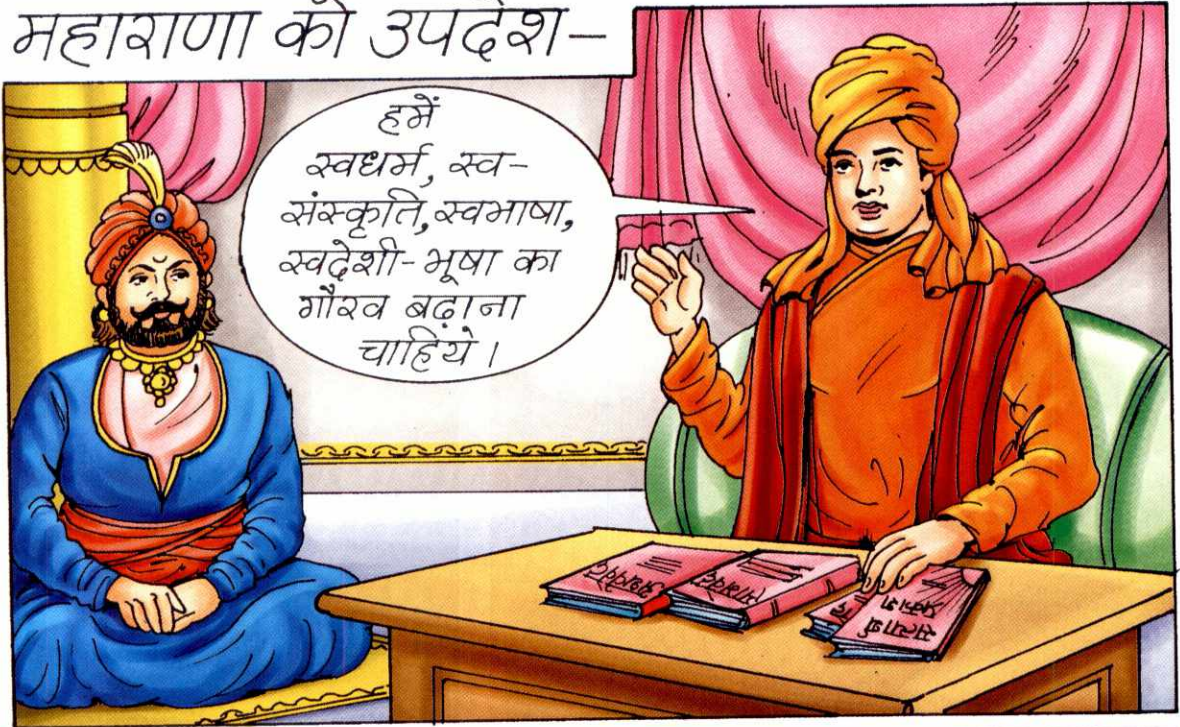
उन्होंने अनेक नौजवानों को विदेशी वस्त्र त्यागने का उपदेश दिया।

स्वामीजी ने श्याम जी कृष्ण वर्मा को लंदन में संस्कृत पढ़ाने भेजा, जो इण्डिया हाउस में वीर सावरकर, मदन लाल ढींगड़ा के गुरु बने तथा एक सेठ से छात्रवृत्ति भिजवाते रहे।
जय हिन्द
वीर सावरकर
श्याम जी कृष्ण वर्मा
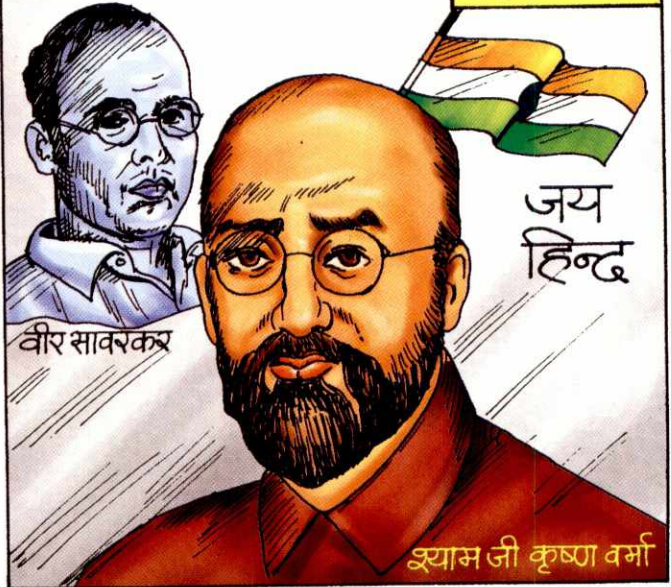
राजपूताने में कार्य–

उदयपुर में महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना से 'वैचारिक क्रान्ति' का आन्दोलन तेज़ हो गया। अनेक नौजवान वैदिक धर्म में दीक्षित होकर स्वसंस्कृति, स्वराज्य-संघर्ष के लिए तैयार होने लगे।
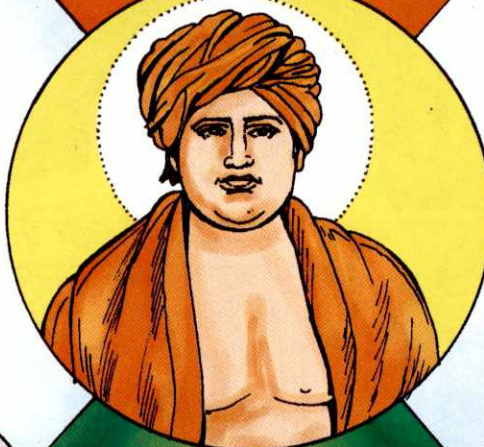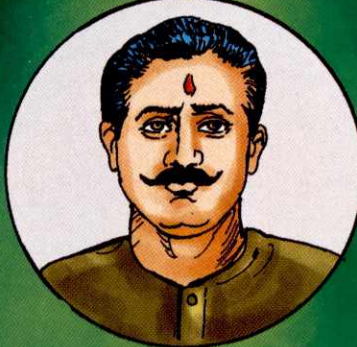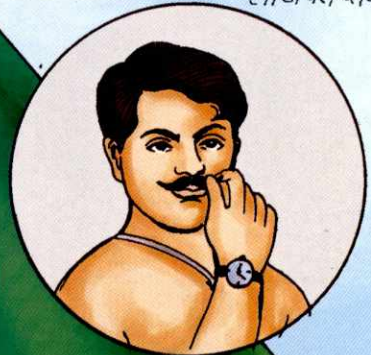
प्रचार हेतु स्वामीजी जोधपुर गये। वहाँ जोधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।

नरेश ने नन्हीं को वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी। अंग्रेज़ों व नन्हींजान के षड्यन्त्र से रसोइये ने काँच युक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया।

स्वामीजी के दूध में ज़हर मिला कर जगन्नाथ द्वारा पिला देने पर स्वामीजी के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। प्रातः काल डॉ॰ अलीमर्दान खाँ ने इंजेक्शन व अन्य दवाओं के द्वारा स्वामीजी के शरीर में और विष प्रवेश करा दिया।
हत्यारे को क्षमादान-
स्वामीजी के पूरे शरीर से ज़हर फूटने लगा अंततः रसोईये को अपनी ग़लती महसूस हुई, उसने स्वामीजी के पास जाकर माफ़ी माँगी।
मुझे क्षमा कर दीजिए, स्वामीजी। मैंने बहुत भयानक पाप किया है, आपके दूध में शीशायुक्त ज़हर मिला दिया था।
ये तूने क्या किया? वेद का कार्य अधूरा ही रह गया। जो होना था हो गया, तू अब ये पैसा ले और यहाँ से चला जा नहीं तो राजा तुझे मृत्यु दण्ड दे देंगे।
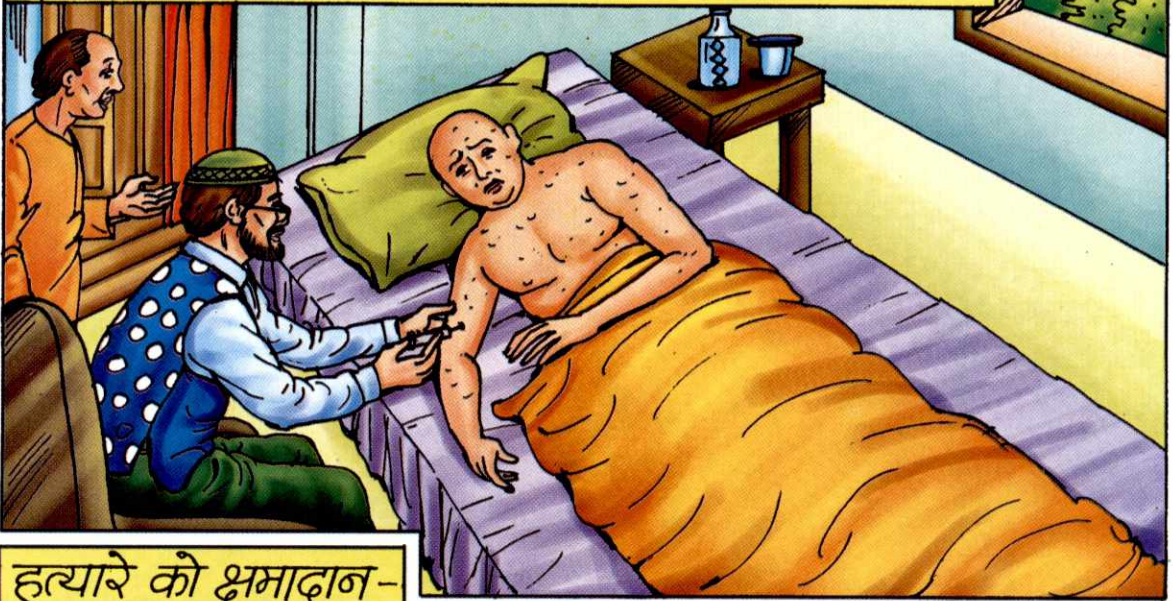
मृत्युन्जयी दयानन्द – अजमेर में ३० अक्तूबर सन् १८८३ ई. को अत्यन्त कष्ट-दायक स्थिति होते हुवे भी प्रसन्नचित्त योगमुद्रा में प्राण त्यागते देख गुरुदत्त (नास्तिक युवक) का जीवन ही पलट गया। वह वैदिक धर्म का दीवाना 'पं. गुरुदत्त विद्यार्थी कहलाया।

महाप्रस्थान के पथ पर –
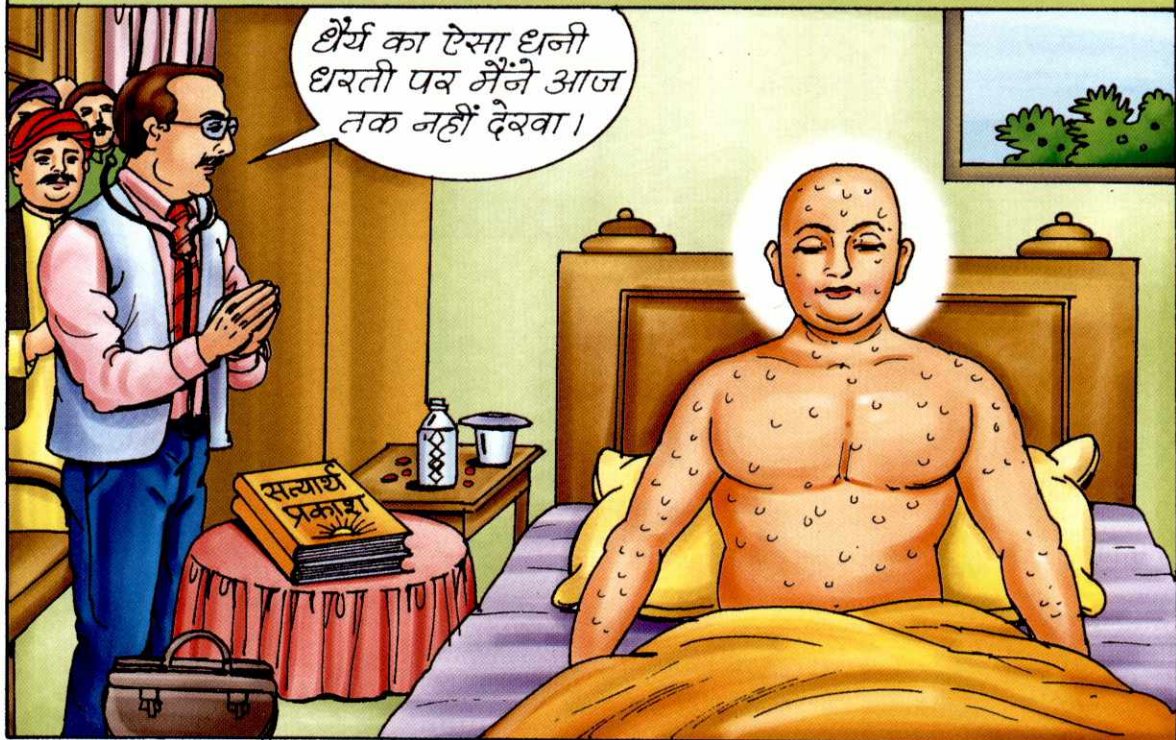
स्वामीजी का स्वप्न– स्वामीजी का स्वप्न था कि विश्व श्रेष्ठ बने और हमारा भारत देश जो कभी देव-भूमि कहलाता था, आज फिर उसी गरिमा और गौरव को प्राप्त करे। स्वामीजी के इसी स्वप्न को साकार करने के लिए आज विश्व भर में करीब दस हज़ार आर्य समाज मंदिरों के माध्यम से वेद प्रचार का कार्य हो रहा है। डी॰ए॰वी॰ स्कूल व कॉलेज में पढ़ने वाले लाखों विद्यार्थी हमारी आशा के केन्द्र हैं। आर्यसमाजों द्वारा चलाए जा रहे विद्यालय भी ऋषि के स्वप्न को साकार करने में बड़ी भूमिका निभाएंगे। **आर्य अनाथालय, गुरुकुल, संन्यास आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, वृद्ध आश्रम**– इनमें निवास करने वाले स्त्री, पुरुष, बच्चे व बूढ़े सभी हमारी आशा के केन्द्र हैं। स्वामीजी की...

...वाणी, उनके विचार, स्वामीजी का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने के लिए हम कटिबद्ध हैं। स्वामीजी द्वारा निर्मित **आर्य समाज** ही वह संस्था है जो संसार में सर्वश्रेष्ठ संस्था है तथा सब मनुष्यों का मार्ग दर्शन करने में समर्थ है।

आज संसार को आवश्यकता है सही मार्ग दर्शन की। इस भूमिका को निभाने के लिए स्वामी दयानन्द के सच्चे सिपाहियों की आवश्यकता है। आओ! हम सब उस महान् योगी, साधु, सन्त, तपस्वी, महर्षि व युगपुरुष के स्वप्नों को साकार करने का सत्य संकल्प करते हैं कि इस देश को पुनः इसके प्राचीन नाम के अनुसार '**आर्यावर्त्त**' बनाएंगे ताकि इस देश की धरती एक बार फिर ऋषि-मुनियों की धरती का गौरव प्राप्त कर सके।
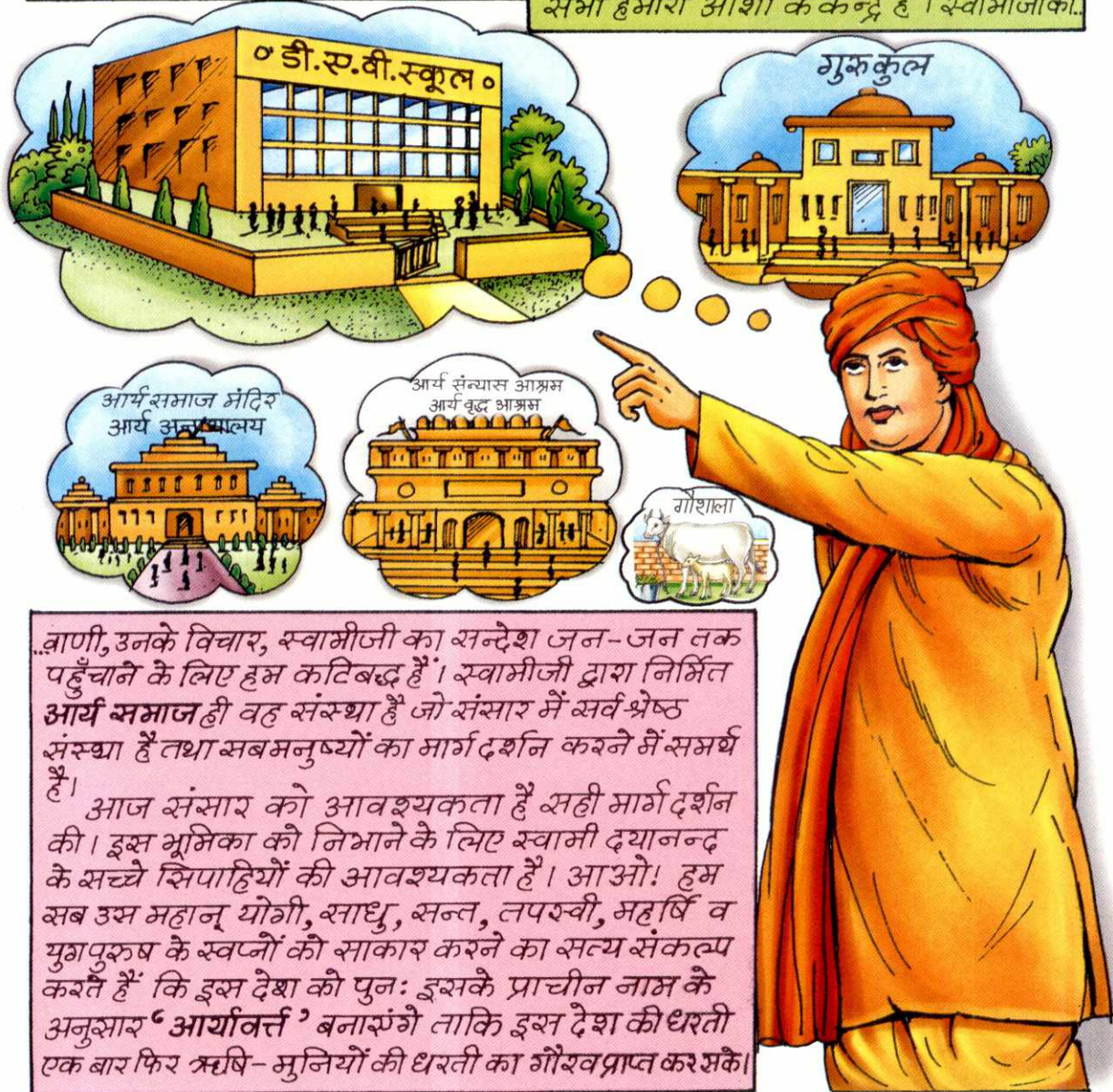
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर आधारित प्रश्न / सही उत्तर पर ☑ करें

१. महर्षि दयानन्द जी का जन्म कहां हुआ?
(क) टंकारी ☐ (ख) टंकारा ☐ (ग) राजकोट

२. महर्षि दयानन्द जी के पिता का नाम क्या था?
(क) श्री कर्षण जी तिवारी ☐ (ख) तिवारी शंकर ☐ (ग) श्री पूर्णानन्द ☐

३. किस घटना से स्वामी जी के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ आया?
(क) बहिन की मृत्यु ☐ (ख) चाचा की मृत्यु ☐ (ग) शिवरात्रि पर्व ☐

४. संन्यास लेने से पूर्व स्वामी जी का नाम क्या था?
(क) चैतन्य ☐ (ख) नैष्टिक ☐ (ग) शुद्ध चैतन्य ☐

५. महर्षि दयानन्द जी ने अपनी संन्यास दीक्षा किस से ली?
(क) गुरु विरजानन्द ☐ (ख) स्वामी पूर्णानन्द ☐ (ग) स्वामी दीक्षानन्द ☐

६. स्वामी जी के मुख्य गुरु कौन थे?
(क) स्वामी पूर्णानन्द ☐ (ख) श्री आत्मानन्द ☐ (ग) गुरु विरजानन्द ☐

७. महर्षि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द जी से किस स्थान पर शिक्षा प्राप्त की?
(क) बनारस ☐ (ख) मथुरा ☐ (ग) पुरी ☐

८. महर्षि दयानन्द जी किस आयु में गुरु के पास शिक्षा लेने पहुंचे?
(क) २१ वर्ष ☐ (ख) १८ वर्ष ☐ (ग) ३६ वर्ष ☐

९. महर्षि दयानन्द जी से गुरु विरजानन्द जी ने दक्षिणा में क्या मांगा था?
(क) धन ☐ (ख) जीवन ☐ (ग) लौंग ☐

१०. स्वामी जी के ब्रह्मचर्य बल की प्रमुख घटनाएं।
(क) रथ का पहिया रोकना ☐ (ख) दो बैलों को छुड़ाना ☐ (ग) क और ख दोनों ☐

११. स्वामी जी ने पहली आर्य समाज की स्थापना कहां की?
(क) कलकत्ता ☐ (ख) बम्बई ☐ (ग) लाहौर ☐

१२. स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना कब की?
(क) सन् १८७४ ☐ (ख) सन् १८७५ ☐ (ग) सन् १८८३ ☐

१३. महर्षि दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका कहां फहराई?
(क) इलाहाबाद ☐ (ख) पुष्कर ☐ (ग) हरिद्वार ☐

१४. महर्षि दयानन्द जी का देहावसान (निधन) कहां हुआ?
(क) उदयपुर ☐ (ख) अजमेर ☐ (ग) जयपुर ☐

१५. महिलाओं को वेद पढ़ने और यज्ञ करने का अधिकार आधुनिक भारत में किसने दिया?
(क) महर्षि दयानन्द सरस्वती ☐ (ख) सर सैयद अहमद खां ☐ (ग) स्वामी विवेकानन्द ☐

१६. तन्त्र विद्या अवैदिक है?
(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

१७. महर्षि दयानन्द सतिप्रथा के समर्थक थे।
(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

१८. महर्षि दयानन्द ने स्त्री शिक्षा का विरोध किया।

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

१९. क्या ईश्वर को किसी मूर्ति में बांधा जा सकता है?

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

२०. क्या मांसाहार मनुष्यों का भोजन है?

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

२१. कौन सा ग्रन्थ विश्व में ज्ञान का प्रकाश कर सकता है?

(क) वेद ☐ (ख) पुराण ☐ (ग) गीता ☐

२२. महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण (निधन) किस दिन हुआ?-

१. दीपावली, २. अमावस्या, ३. ३० अक्तूबर, १८८३

(क) १ ☐ (ख) १ और २ ☐ (ग) १, २ और ३ (तीनों) ☐

२३. वेद ईश्वरीय वाणी है। श्रीराम एवं श्री कृष्ण हमारे महापुरुष हैं।

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

२४. मूलशंकर को किस मठ का मठाधीश बनने का लालच दिया गया?

(क) शोखी मठ ☐ (ख) ओखी मठ ☐ (ग) भोरवी मठ ☐

२५. सभी आश्रमों का आधार कौन-सा आश्रम है?

(क) ब्रह्मचर्य ☐ (ख) संन्यास ☐ (ग) गृहस्थ ☐

प्रश्न पत्र भरने वाले विद्यार्थी का जानकारी पत्र

विद्यार्थी का नाम :.................................... पिता का नाम :....................................

आयु : दिन.................... मास.................... वर्ष....................

विद्यालय रिकॉर्ड में अंकित जन्मतिथि :....................................

घर का पूरा पता :....................................

....................................राज्य.................................... पिन : ....

फोन/मो. :.................................... Email :....................................

विद्यालय का नाम एवं पूरा पता : ....

....................................विद्यालय का Email :....................................

हस्ताक्षर

ओ३म्

विद्यार्थियों के आठ अवगुण

आलस्य

नशा करना

मूर्खता
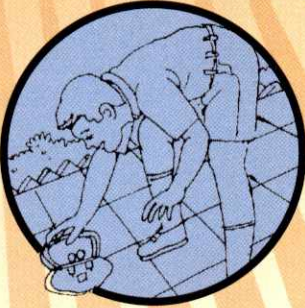
लोभ-लालच करना

दुःखी असफल विद्यार्थी

चंचलता

अभिमान 'घमंड करना'

जड़ता
कभी पढ़ना कभी न पढ़ना

व्यर्थ इधर-उधर की बातें करना

जीवन में सफलता और उन्नति पाने के लिए विद्यार्थी अपने ये दोष दूर करें।

ओ३म्

करें कॉमिक्स के माध्यम से प्रचार-दें युवा पीढ़ी को श्रेष्ठ संस्कार

बाल प्रचार शृंखला के कॉमिक्स (चित्र कथाऐं)

कॉमिक्स हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं में भी उपलब्ध।
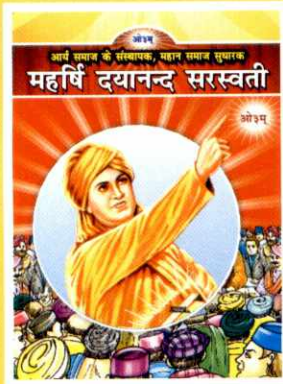
इस में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्श जीवन का चित्रों सहित संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। निश्चित रूप से इससे बच्चे उनके आदर्श जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे एवं प्रेरणा ले सकेंगे। अंत में एक लघु प्रश्नावली भी दी गई है। हिन्दी, अंग्रेजी, डच, गुजराती, पंजाबी, बंगला भाषा में भी उपलब्ध।
मूल्य - 25/- रु. पृष्ठ 34
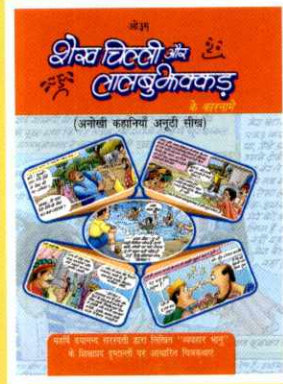
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने लघु ग्रन्थ व्यवहारभानु के माध्यम से सामान्यजन को दृष्टान्तों के द्वारा उचित व्यवहार समझाने का प्रयत्न किया है। इस कॉमिक्स में उन्हीं दृष्टान्तों को चित्रों के माध्यम से बच्चों को समझाने के लिए प्रस्तुत किया गया है।
मूल्य - 25/- रु. पृष्ठ 32
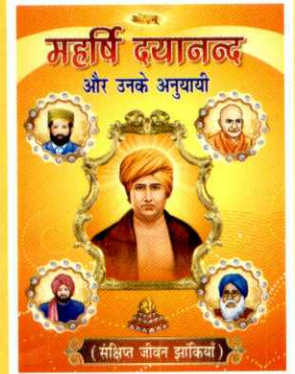
महर्षि दयानन्द जी के वे शिष्य, जिन्होंने अपना जीवन समर्पित करके राष्ट्र की उन्नति एवं समाज सुधार के लिए अथक कार्य किया। ऐसे चार शिष्य -पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंस राज एवं पं. लेखराम जी की संक्षिप्त जीवनी के साथ साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की संक्षिप्त जीवनी भी दी गयी है।
मूल्य - 35/- रु. पृष्ठ 52
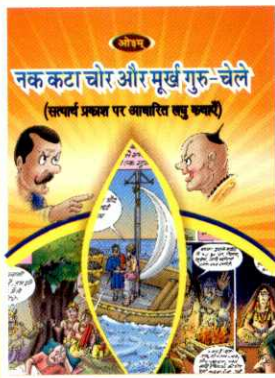
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में अपने विषय को समझाने के लिए अनेक दृष्टान्तों का प्रयोग किया है। ऐसे ही दृष्टान्तों को बच्चों को समझाने हेतु चित्रावली के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।
मूल्य - 30/- रु. पृष्ठ 32
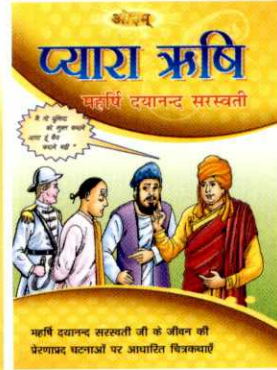
महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की ऐसी अनेक प्रेरक घटनाऐं हैं जो व्यक्ति के जीवन को एक नई दिशा दे सकती है। उन्हीं प्रेरक घटनाओं को बच्चों को प्रेरणा देने के लिए चित्रावली के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
मूल्य - 25/- रु. पृष्ठ 32
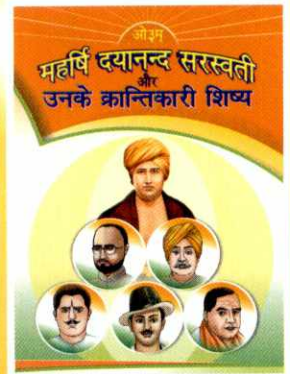
महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक थे। उनकी प्रेरणा पर उनके अनेक शिष्यों ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन आहूत कर दिया। ऐसे ही शिष्य-सरदार भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय भाई परमानन्द आदि की संक्षिप्त जीवनी महर्षि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी के साथ इस चित्रावली में दी गई है।
मूल्य - 35/- रु. पृष्ठ 48